August, 2022 issue

IKMG पत्रिका

IKMG LTD
Connecting people who care..

14th edition

Core Members

Raj Khanna

Founder Chairman - IKMG

+44 7973386826

Patrons

Kamla Seth

Patron

+91 9899109444

Rakesh Tandon

Patron

+91 9839211697

Shashi Mehrotra

Patron

+91 9935680727

Advisory Council

Akhil Tandon

Member - Advisory Council

+91 8853000168

Suman Kapoor

Member - Advisory Council

+64 211801234

Directors

Amit Tandon

Director

+91 9410295153

Kunu Kapoor

Director & President – Kannauj

+91 9450046636

Mukul Varma

Director

+91 9935246412

Paras Tandon

Director

+91 9616940402

Sharad Mehrotra

Director

+91 9958363661

Dr. Shonu Mehrotra

Director

+91 9319124445

Varun Mehrotra

Director

+91 8840760368

Presidents - India Chapters

Chhavi Mehrotra

President - Agra

+91 9897586030

Dr. Kamal Dhawan

President - Women's Wing - Kanpur

+91 9415042354

Jai Shree Khanna

President - Moradabad

+91 9837035052

Kiran Batra

President - Jhansi

+91 7355295225

Mala Mehrotra

President - Vrindavan & Mathura

+91 9690272453

Mamta Sethi Bhamri

President - Meerut

+91 8650903939

Mita Kakkar

President - Jaipur

+91 9602606226

Neha Kapoor Mehrotra

President - Pilibhit

+91 9457534973

Nishu Mahendra

President - Noida & Ghaziabad

+91 9911437041

Prachi Kapoor

President - Mumbai

+91 9769215340

Rachna Tandon

President - Women's wing - Lucknow

+91 9415019527

Rajesh Khanna

President - Ajmer

+91 9214984495

Rajni Kapoor

President - Gurgaon & Faridabad

+91 9821894622

Rajni Seth

President - Shahjahanpur

+91 9415244800

Rakhi Chopra

President - Lakhimpur

+91 9451238077

Ranjan Jalote

President - Varanasi

+91 7007450271

Renu Mehrotra

President - Biswan

+91 9454617178

Rohit Mehrotra

President - Prayagraj

+91 9415215082

Santosh Kapoor

President - Aurangabad

+91 9370651803

Shalini Malhotra

President - Bareilly

+91 7983561554

Sharad Kapoor

President - Lucknow

+91 9415584459

Shreyas Seth

President - Kolkata

+91 9903744433

Shobhna Mehrotra

President - Sitapur

+91 9450795271

Shubham Kapoor

President - Ramnagar & Kashipur

+91 7906730514

Sourabh Tandon

President - Delhi

+91 7503015186

Vimal Mehra

President – Jodhpur

+91 9772200200

Presidents - International Chapters

Anamika Khanna

President - Hongkong

+852 93252274

Anirudh Khanna

President - Germany

+49 15254383319

Gaurav Mehrotra

President - USA

+1 6788344405

Kanhaiya Mehrotra

President – Canada

+91 9411114424

Priti Mehrotra

President – Australia

+61 432152575

Other office bearers

Alok Mehrotra

Vice President - Lucknow

+91 9970058809

Ankit Mehta

Vice President - Mussoorie & Dehradoon

+91 8218817243

Chander Mohan

Vice President - Ambala

+91 8607552424

Darshana Khanna

Vice President - Moradabad

+91 9927031042

Kanak Mehrotra

Vice President - Australia

+61 437565612

Kuldeep Arora

Vice President - Vrindavan

+91 9837059648

Laxmi Khanna

Vice President - Women’s wing - Kanpur

+91 9005017984

Meghna Khanna

Vice President - Shahjahanpur

+91 8090311101

Naresh Burman

Vice President - Mathura

+91 9897107775

Nayan Mehrotra

Vice President - Youth Wing and Gurgaon & Faridabad

+91 8377956384

Nitin Mehrotra

Vice President & Media Head - Kanpur

+91 9839032239

Pawan Mehrotra

Vice President - Agra

+91 8126732115

Puneet Mehrotra

Vice President - Bareilly

9997191007

Reena Mehrotra

Vice President - Kannauj

+91 9918533774

Rina Burman

Vice President - Kolkata

+91 9831021581

Ruby Puneet Bhalla

Vice President - Biswan

+91 7985450407

Sapna Kakkar

Vice President - Lakhimpur

+91 9451321357

Shivam Mehrotra

Vice President – Ghaziabad

+91 8860180000

Suchita Kacker Meena

Vice President – Delhi

+91 9811055003

Utkarsh Mehrotra

Vice President - Varanasi

+91 8896102175

Vikas Kapoor

Vice President – Jodhpur

+91 9462034715

Poonam Tandon

Treasurer - Shahjahanpur

+91 7499440259

Rachna Mehrotra

Treasurer - Kannauj

+91 9935436959

Rama Kant Tandon

Treasurer - Lucknow

+91 9839104840

Shubh Tandon

Treasurer - Noida & Ghaziabad

+91 9868400059

Manju Mehrotra

Secretary - Kannauj

+91 9838338484

Pankaj Mehrotra

Secretary – Noida & Ghaziabad

+91 9899248247

Sachin Kapoor

Secretary - Bareilly

9336937272

Sanjay Tandon

Secretary – Lucknow

+91 8318919237

Jayant Mehrotra

Mentor - Mumbai

+91 9867713756

Savita Chopra

Mentor - Lakhimpur

+91 9451687226

From the Chairman's desk

Writer: Mr. Raj Khanna, London

WHAT IS IKMG

International Khattri Mahasabha Group Ltd conceptualised almost just over 4 years ago with a view to bring The Khattri Community together on one platform from different walks of life from Round the Globe.

It helped members find their lost family and friends for over 30 years. Most important so many who were living in their own homes were exposed to the World and are now know world over through IKMG Platform.

Slowly but surely IKMG became an INSTITUTION where Member GOT identity from nowhere to be known all over the world. With the help of each other and guidance, members got responsibilities and became Presidents of various chapters they belonged to.

Just 7 days back on 25th we got Members count to 10000 - A MILSTONE! This achievement is great by any standards.

After the inception of IKMG, KITO (Khattri International Trade Organisation was started and KITO also has 11 members. IKMG has its own YouTube Channel, IKMG Radio. Radio has helped some individuals coming out of Depression and some members can fulfil and achieve what they wanted to.

We do encounter problems like one big family but then in 10000 members, there will be difference of opinion and we try to resolve the issues.

Most important some members start joining other groups for the basic fact that what they have learnt in IKMG, can share in other IKMG Chapters. Here couple of points to be cleared - Members join, learn, and then go on their own with some members and start their own platform. We do not call it bad but its excellent, that they have learnt and moved on. It’s good to see all flourishing as whatever we say, they are the branches of IKMG.

Wishing all of you a very

Happy Independence Day and a

blessed Rakshabandhan!

Mr. Raj khanna is the Founder Chairman of IKMG and resides in London. He is committed to social service, philanthropy and well being of the society.

Table of Contents / विषय सूची

S. No.	Content	Page No.
1	ठोकर	22
2	कवि वक्त की आवाज	24
3	सुविचार	26
4	बरसात का है मौसम	28
5	अंक शास्त्र	30
6	Hindu Rites & Rituals	38
7	तू मानव	85
8	वक़्त बदलता है	87
9	अगस्त माह में पड़ने वाले त्योहार	102
10	Personality of the month	107
11	संगीत का महत्व	109
12	प्रभात	112
13	चरण स्पर्श का महत्व	114
14	कसक	116
15	निर्गुण	117
16	स्वानुशासन	119
17	आशा	121
18	IKMG Matrimonial Group	122
19	राजश्री पुरुषोत्तम दास टंडन	124
20	Kitchen Tales	131
21	Our proudest moments	136
22	The art corner	138
23	Love my style	144

ठोकर

लेखक - श्री मनोज पुरी, ग्रेटर नोएडा

जब भी मुझे तुम्हारे हाथों का हथियार मिला है,
तेरे रूप में जीवन में मुझे सच्चा यार मिला है।
माँ की ममता का मुझको तो पहला प्यार मिला है,
कुदरत से तोहफे के रूप मे यह संसार मिला है।।

यह मत सोचो ! जो किस्मत में था वो ही मुझे मिला है,
कर्म से ही तो इंसा के जीवन का फूल खिला है।
अकर्मण्य तो जीवन अपना यूँ ही व्यर्थ गवाते,
प्रभु की प्रभुता जीवन भर समझ नहीं वो पाते।।

प्रभु की लीला से ही मानव ने जीवन पाया है,
कर्मों के फल से अपने वह धरती पर आया है।

स्वर्ग यहीं है, नर्क यहीं है, यहीं मोह माया है,
गिर कर भी इस गड्ढ़े में वह समझ नहीं पाया है।।

प्रथम पूज्य तो मात-पिता हैं जिनका तू जाया है,
दूजी जिसको ब्याह के अपने घर मे तू लाया है।
तीजी जिसको धारण कोख में तूने करवाया है,
पूज लिया इन सबको जिसने ईश्वर को पाया है।।

अहम मे जिसने दूजो को हरदम ठुकराया है,
वक्त गुज़र जाने पर वह हरदम पछताया है।
कुदरत ने तो इंसा को पग-पग समझाया है,
पर बिन ठोकर के उसकी समझ में आखिर कब आया है।।

श्री मनोज पुरी 'केन्द्रीय राजस्व नियन्त्रण सेवा ' के सेवा निवृत्त राजपत्रित अधिकारी हैं जिनकी कविताओं का संग्रह- 'अंजुमन' काव्य जगत में चर्चित रहा है तथा वे कई स्थानों पर पुरस्कृत व सम्मानित हुए हैं। आप पिछले ५० साल से योग से जुड़े हैं व ३५ वर्षो से अधिक योग प्रशिक्षक के रूप में समाज सेवा कर रहें हैं।

कवि वक्त की आवाज

लेखिका - डॉ सुमन मेहरोत्रा, मुजफ्फरपुर

जहां न जाये रवि

वहां जाए कवि,

सृष्टि सृजन के निर्माता कवि,

तुम वक्त की आवाज,

विशुद्ध भाव प्रखर महान,

कर्मवान, न्यायवान, स्नेहवान,

वेदना के स्वर की तान,

प्रेम रस के तुम सोपान ,

सागर की लहरों से लड़ते,

शांत नदी में गोता खाते,

पक्षी के कलरव के संगी,

पुष्पों का मधुपान करत भौंरे,

जन भावना है तुमको प्यारी,

कवि की दुनिया है न्यारी,

अपनी लेखनी से दम भरते,

कानून सम्मत बात जो कहते,

लोकहित का परचम लहराते,

कवि लेखनी तेरी सार्थक,

जन -जन ने जब उसे स्वीकारा।

डा० सुमन मेहरोत्रा करीब चालीस वर्षों तक निजी स्कूलों में सम्मानित शिक्षिका पद पर प्रतिष्ठित रहीI आपकी रुचि, पठन,पाठन,लेखन,सिलाई,कढाई आदि में है एवं आपकी कविता,लेख, कहानी, समीक्षा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं I

सुविचार

लेखिका - श्रीमती चंदा मेहरोत्रा, आगरा

- गृहस्थ एक तपोवन है जिसमें समय, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है ।
- अच्छी पुस्तकें जीवन में देव प्रतिमाएँ हैं, उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।
- अपनी रोटी मिल बांट कर खाओ ताकि तुम्हारे सभी भाई सुखी रह सकें।
- ईमानदार होने का अर्थ है हजार मनकों से अलग चमकने वाला हीरा।
- आय से अधिक खर्च करने वाले तिरस्कार सहते हैं, कष्ट भोगते हैं।
- ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है जिस तरह कपड़ों को कीड़ा खा जाता है।
- धर्म का आचरण करने वाला गृहस्थ भी सहज में ही प्रभु की कृपा प्राप्त कर लेता है ।
- मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं वह उसका निर्माता और स्वामी है।
- तुम जिस से घृणा करते हो, लात मारते हो, हो सकता है उसके हृदय में दिन-रात भगवान निवास करते हों
- इंद्रियों से मन श्रेष्ठ है मन से बुद्धि श्रेष्ठ है बुद्धि से ज्ञान श्रेष्ठ है और ज्ञान से परमात्मा श्रेष्ठ है।

■ बुरे स्वभाव से अपने लिए नरक न बना, अपने स्वभाव से दूसरों के लिए स्वर्ग बना।

■ जो गीता अर्जुन को भी दोबारा सुनने को नहीं मिली वह हमें प्रतिदिन पढ़ने सुनने को मिल रही है यह भगवान की कितनी असीम कृपा है।

■ करना चाहते हो तो सेवा करो, जानना चाहते हो तो अपने आप को जानो और मानना चाहते हो तो प्रभु को मानो मानव जीवन का यही सार है।

■ मानव में प्रेम होना बहुत जरूरी है बिना प्रेम के परमात्मा नहीं रीझते ।

■ अपना मूल्य समझो और विश्वास करो कि तुम संसार के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो।

■ प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं आवश्यकताएं कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बैठाए ।

■ सभ्यता का स्वरूप है सादगी अपने लिए कठोरता और दूसरों के लिए उदारता होनी चाहिए।

श्रीमती चंदा मेहरोत्रा कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ी हुई है यह आगरा खत्री महिला सभा की महामंत्री हैं व सभी सदस्यों को समय समय पर ज्ञानवर्धक जानकारी देती रहती हैं ।इसके अलावा यह अखिल भारतीय महिला परिषद शाखा , महिला शांति सेना, वनिता विकास , माधवी गौ सेवा समिति व उत्तर प्रदेश अपराध निरोधक शाखा से भी जुड़ी हुई हैं ।

बरसात का है मौसम

लेखिका - श्रीमती सीमा मेहरा, आगरा

मन मयूर नाचे, बरसात का है मौसम,

सप्तम सुरों की सरगम!

मधुर मधुर बाजे, बरसात का है मौसम।

राहत मिली है दिल को भारी तपन से,

कैसे बयाँ करें हम, बांटे ये   कैसे सबको,

प्रकृति श्रृंगार साजे बरसात की चहु दिश है खुशिया नाचे

हर दिशा खुशी से नाचे, बरसात का है मौसम।

प्रगति का रंग निखरा, सौंदर्य उभर के आया।

धरती गगन ने मिलकर, पावस दिवस मनाया।

हम तुम भी गाएं-नाचें बरसात का है मौसम

मुद्दत के बाद अब तो मन की तपन मिटी है।

बेचैनी जितनी भी थी, आखिर को अब घटी है।

मन आनंद अपार साजे, बरसात का है मौसम।

मन मयूर नाचे..............!!!

Mrs. Seema Mehra resides in Agra and enjoys writing poems.

अंक शास्त्र

लेखिका - श्रीमती शोनू मेहरोत्रा, आगरा

अंक ज्योतिष में प्रसिद्ध नाम है काउंट लुईस का जिसे ज़्यादातर लोग कीरो (Kero) के नाम से जानते हैं। कीरो की अनेक भविष्यवाणियां सत्य हुई हैं और इनके द्वारा लिखी हुई किताबें आज भी काफी बिकती हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि कीरो ने ही अंक ज्योतिष को मशहूर किया है। ऐसा माना जाता है कि कीरो ने अपना काफी समय भारत में बिताया था, जहाँ उसने बनारस के किसी जोशी परिवार से हस्तरेखा और ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था।

अंक ज्योतिष (Numerology) के अनुसार, हमारे जीवन को मुख्यतः तीन तरह के अंक प्रभावित करते हैं - मूलांक, भाग्यांक और नामांक। किसी भी जातक का मूलांक उनकी जन्म तिथि होता है, जैसे- शाहरुख खान २ नवम्बर को पैदा हुए, तो उनका मूलांक हुआ २। उनकी पूरी जन्म तिथि है २.११.१९६५ तो उनका भाग्यांक हुआ ७ (२+१+१+१+९+६+५=२५, २+५=७)। मूलांक तथा भाग्यांक स्थिर होते हैं, इनमें परिवर्तन सम्भव नहीं क्योंकि किसी भी तरीके से व्यक्ति की जन्म तारीख बदली नहीं

जा सकती। नामांक बदले जा सकते हैं। अंक ज्योतिष में प्रत्येक अक्षर का एक अंक है जैसे A =१, B =२ इत्यादि। अंक ज्योतिष में नाम के हिज्जे बदल कर नामांक को मूलांक और भाग्यांक के अनुसार लक्की बनाया जा सकता है। अनेक कामयाब टीवी सीरियल के नाम के उल्टे पुल्टे हिज्जे इस बात का सबूत हैं कि अंक ज्योतिष की सहायता से किस्मत को अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। अंक ज्योतिष में प्रत्येक अक्षर को अंक प्रदान करने के विभिन्न तरीके हैं, जैसे कबाला, चल्डियन और प्यथागोर्स इत्यादि।

कीरो के अनुसार जिनके जन्म की तिथि (Date of Birth) का जोड़ ४ (४,१३,२२,३१) या ८ (८,१७,२६) आता है, उन व्यक्तियों के भाग्य में बहुत उतार चढ़ाव आते हैं, जैसे शिल्पा शेट्टी ८ जून, धर्मेंद्र ८ दिसम्बर, अक्षय खन्ना ४ अप्रैल)।

जिन व्यक्तियों की जन्म तिथि (Date of Birth) का जोड़ २ आता है वे व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध होते हैं और इनका रुझान कला के क्षेत्र में होता है, ये लोग जनता से जुड़ना पसंद करते हैं, उदाहरण के तौर पर, महात्मा गाँधी (२ अक्टूबर), अमिताभ बच्चन (११ अक्टूबर), शाहरुख़ खान (२ नवम्बर), अजय देवगन (२ अप्रैल) और संजय दत्त (२९ जुलाई)।

■ 1 मूलांक वाले व्यक्ति वो होते हैं, जिनका जन्म किसी भी माह की १, १०, १९ या २८ तारीख को हुआ है। ऐसे व्यक्ति तरक्की पसंद और महत्वाकांक्षी होते हैं, धीरु भाई अम्बानी और रतन टाटा दोनों ही २८ (२+८=१०, १+०=१) दिसम्बर को पैदा हुए हैं और दोनों का व्यापार किस स्तर का है यह पूरी दुनिया के सामने है।

■ मूलांक 2 वाले व्यक्तियों के स्वभाव और उनसे जुड़े रहस्यों के बारे में-- जिन लोगों का जन्म माह की 2, 11, 20 ओर 29 तारीख को होता है, उनका मूलांक 2 होता है। इस मूलांक के लोगों का स्वामी ग्रह चंद्रमा है। चंद्र की प्रकृति शीतल, शांत और चांदनी देने वाली होती है, उसी प्रकार इस मूलांक के लोगों का स्वभाव भी अत्यधिक शांत होता है। इस मूलांक के व्यक्ति तन के साथ-साथ मन से भी खूबसूरत होते हैं और यह सुंदर लोगों की ओर आकर्षित भी जल्दी होते हैं। हलांकि इनके इस गुण के कारण कई बार इनके सामने कई समस्याएं भी आ जाती हैं।

■ 3 मूलांक वाले लोग वो होते हैं, जिनका जन्म किसी भी माह की ३,१२,२१ या ३० तारीख को हुआ है। ऐसे लोग कुछ जल्दबाज़ किस्म के होते हैं, जिसकी वजह से ये लोग परेशानियों में घिर जाते हैं।

- जिस व्यक्ति का जन्म किसी भी महीने की 4, 13, 22 या 31 तारीख में हुआ है, उसका मूलांक 4 माना जाता है। मूलांक 4 वाले जातक अपने खुलकर जीने के स्वभाव से जाने जाते हैं। इनकी कोशिश होती है कि इनके साथ साथ दूसरा भी खुश रहे। मूलांक 4 के जातक अपने दोस्तों पर पैसा खर्च करने से पीछे नहीं हटते। इतना ही नहीं मूलांक 4 के जातक हर विषय का अच्छा ज्ञान रखते हैं और अपने काम से दूसरों को काफी प्रभावित करते हैं। मूलांक 4 के जातक घमंडी और उपद्रवी होते हैं।

- 5 मूलांक वाले व्यक्ति वो होते हैं, जिनका जन्म किसी भी माह की ५, १४ या २३ तारीख को हुआ है। ऐसे व्यक्ति मिलनसार और आर्थिक मामलों में किस्मत वाले होते हैं।

- 6 मूलांक वाले व्यक्ति वो होते हैं, जिनका जन्म किसी भी माह की ६, १५,या २४ तारीख को हुआ है। ऐसे व्यक्ति खूबसूरती पसंद होते है और ग्लैमर के क्षेत्र में बहुत नाम कमाते हैं। जैसे, माधुरी दीक्षित (१५ मई) की सफलता की कहानी किसी से छुपी नहीं है।

- मूलांक 7 जिनका जन्म किसी भी माह की ७,१६ या २५ तारीख को हुआ है, उनका मूलांक ७ है। ऐसे व्यक्ति कुछ अलग तरह के होते हैं। सैफ अली खान (१६ अगस्त), क्रिकेटर पिता की सन्तान और छोटे नवाब होते हुए भी फिल्म क्षेत्र में आए।

▪ जिस व्यक्ति का जन्म किसी भी महीने की 8, 17, या 26 तारीख में हुआ है, उसका मूलांक 8 माना जाता है.

मूलांक 8 के जातक बहुत ही रहस्यमयी, शांत, गंभीर और निश्छल प्रवृत्ति के होते हैं। इस अंक के जातक हर विषय पर पूर्ण गहनता से विचार विमर्श करते हैं। यह लोग किस्मत से ज्यादा अपने कर्म पर भरोसा करते हैं।

मूलांक 8 के जातक किसी भी काम को शुरु करते हैं तो उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। इन्हें दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं आता। यह अपने काम से मतलब रखते हैं, और बिना बताए अपना काम पूरा निपटा लेते हैं। मूलांक 8 के जातक न तो किसी की चापलूसी करते हैं और न ही इन्हें पसंद होता है कि कोई व्यक्ति इनकी चापलूसी करे। इन लोगों को बहुत अधिक मेहनत करने के बाद ही सफलता मिलती है।

▪ 9 मूलांक वाले व्यक्ति वो होते हैं जिनका जन्म किसी भी माह की ९,१८ या २७ तारीख को हुआ है। ऐसे व्यक्ति दबंग प्रवर्ति के होते हैं। जैसे सलमान खान और शत्रुघ्न सिन्हा, दोनों का ही मूलांक ९ है।

अंक ज्योतिष (Numerology) कि सहायता से हमअपने भाग्यशाली रंग, दिन और रत्न भी जान सकते हैं।

अंक भाग्यशाली रंग भाग्यशाली दिन भाग्यशाली रत्न

1- लाल, सुनहरा और नारंगी, दिन रविवार, रत्न माणिक्य

2- सफेद, हल्के रंग, दिन सोमवार, रत्न मोती

3- पीला, नारंगी, दिन गुरुवार , रत्न पुखराज

4- हल्का भूरा, दिन बुधवार, रत्न गोमेद

5- हरा, दिन बुधवार , रत्न पन्ना

6- चमकीला सफेद, दिन शुक्रवार , रत्न-हीरा

7- स्लेटी, दिन बुधवार, रत्न लहसुनियां

8- नीला, काला, दिन शनिवार, रत्न नीलम , काला हकीक

9- लाल, दिन मंगलवार, रत्न मूंगा

इस प्रकार हम अंक ज्योतिष के माध्यम से अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बना सकते हैं।

Dr. Shonu Mehrotra resides in Agra and is an astro, Vastu, numerology & occult science expert. She is a social activist and runs an NGO called Sharan Sewa Samiti.

IKMG Patrika

Invites our own writers

for

September edition

Stories | Poems | Recipes | Artwork | Thoughts | Style

Pls. send your entries latest by August 15, 2022

Entries should be sent in word format only (**not more than 1500 words**) along with your brief introduction and a pic.

In case any article/story is more than 1500 words, we will either split it in two editions or will not be able to carry it!

Keep writing; keep shining; keep smiling

patrika@ikmgglobal.org
9958363661

IMPORTANT HINDU DATES

Significant Days & Dates in the Indian Tradition

The Indian calendar has a long list of festivals which vary in their origin. While some are celebrated as the birthdays of gods, saints or national heroes, others are held on occurrence of change of seasons or the origin of myths and legends of the land.

Peculiarly, there is yet another reason for festivals to be celebrated: on account of astronomical and astrological occurrences.

Makar sankranti, that falls every year around 04 January, is a date that has astronomical as well as scientific and medical significance. This is the day when the sun transits from the dhanu

rashi or Sagittarius to maker rashi or Capricorn. It is on this date that the sun moves up from the southern sphere to the northern sphere, as a result of which the days become longer and the severity of the winter becomes milder. This change of position of the sun has a spiritual significance too. From this day onwards, the flight of human souls of pious people who die after this day onwards can easily soar higher into the upper regions of the cosmos. It is so because the air, due to increased intensity of heat, becomes lighter and the soul sails upwards with less resistance. Bhishma Pitamaha of the Mahabharata fame, though he fell on the the battlefield on the tenth day of the battle in the month of November, breathed his last at his will after fifty-eight days when the sun had moved to a particular position in the northern sphere from the southern sphere.

The West has yet to study this aspect of human life. However, Indian scientists of yesteryears, the wise rishis and munis, had carried out vast research in the field of metaphysics and spiritualism and matter related to life after death; hence the conclusion about the faster ascent of the soul after makar sankranti.

Owing to the severe cold during winter, particularly in the north of the country, the temperature of the human body tends to be low. Therefore, toxic matters get accumulated, which are obviously harmful. A simple, practical, yet scientific method to flush out the toxins from the human system at the end of the winter is to consume til or sesame seed laddus and rewaris or sweatmeats for forty days, beginning makar sankranti until Holi. Medically, sesame seeds have natural characteristics to absorb and flush out toxins.

In the month of February, as the earth traverses further along the sun's orbit, comes the festival of Vasant Panchami, now known as Basant Panchami. In terms of comparative cultural significance, the festival can be compared to the Chinese New Year and the Christian Candlemass. On this fifth day of the month of magha, traditionally, yellow clothes are worn, and sweet saffron rice cooked, especially in north India, to herald the onset of vasant or spring. This day is considered very auspicious for initiating young ones into education. In olden days young pupils were led to temples or under the shade of peepel trees for initiating them into education after having performed the Saraswati Puja.

Though times have changed now and we follow the British calendar to admit children into schools in the months of April-May, Basant Panchami is still celebrated as is Saraswati Puja which is still performed on this day.

Till around the 1950’s, men and women used to be seen zealously flying kites on this day. Mustard fields are resplendent with their tiny yellow flowers in full bloom, ready for harvesting. Varieties of flowers start blooming around this time, and there is a sweet fragrance in the air.

In the ancient times, owing to the beauty of nature all around, Basant Panchami was oriented more towards Kamadev, the god of love. It is believed that on this day, Kamadev had trounced Lord Shiva by disturbing him from his deep yogic trance at the behest of other gods so as to persuade him to marry Parvati, the daughter of Himavat, the king of the northern Himalayas. Thus, Basant Panchami is associated with Kamadev, his wife, Rati, and their friend Vasant (the personification of the season of spring).

A special festival called Vasantmahotsav used to be celebrated on the day of Basant Panchami. In other parts of the country, it was celebrated as Dadhi Kamdho. Even though times have changed, people are still seen wearing yellow clothes and cooking sweet saffron yellow rice to keep the tradition alive today.

Significance of Makar Sankranti

Indian sages and seers made detailed studies of the movement of planets in relation to the sun and the earth. There are twelve zodiac signs that are constantly in motion. Therefore, the position of the sun varies from time to time in relation to a particular zodiac. According to the Indian astrological system, the transition of the sun from one zodiac to another is called sankranti. Since there are twelve zodiacs, there are twelve sankrantis, of which makar sankranti is of great importance. During this sankranti, which falls around 04 January every year, the sun transits from the southern sphere to the northern sphere by moving from Sagittarius or dhanu rashi to Capricorn or makar rashi – Hence the name makar sankranti. The actual time of the transition is fleeting and cannot

normally be viewed with naked eyes. However, there is a place, the famous Sabarimala shrine in Kerala, from where the auspicious transition of the sun can be seen even with naked eyes for a few seconds. The exact duration of the movement of the sun's transition is known as makar jyoti.

Similarly, when the sun moves from the northern hemisphere to the southern hemisphere around mid-July, the transition is known as karkat sankranti. This day onwards, the sun moves away from the earth, resulting in shorter days and causing winter in the region around the Indian subcontinent. Shorter days and softer intensity of the sun's rays change the inner chemistry of both human beings and nature. The period between these two sankrantis – karkat to maker – is known as dakshinayan. The sun remains below the equator towards the South Pole in this period.

On the auspicious day of makar sankaranti, people observe a fast and worship the sun. In the evening, they eat sesame seeds or til in the form of laddus and rewaris or other similar sweetmeats. Linseed

has the power to absorb inner negativities caused by the effect of winter. After maker sankranti, the temperature on earth starts to gradually warm up and once again transforms the inner human chemistry and that of the trees and plants on earth. Makar sankranti, therefore, is an important event in the Hindu calendar that denotes planetary transition as well as change in human chemistry.

Holi: A Science & an Astrological Event beyond Colours

Holi is an ancient festival that dates back to the Vedic era of Indian history. After makar sankranti, as the earth advances along the sun's orbit and the phalguna purnima or full moon occurs, it marks the end of winter and the onset of the spring season. After this purnima commences the Hindu calendar with its first month: chaitra. It starts when the moon completely turns full. It is an astronomical event when the winter bids goodbye and the summer sets in. In fact, Holi is celebrated at the approach of vernal equinox. Originally, during the Vedic age, Holi was not celebrated the way it

is today. Fun and frolic were added to the festivity later in the history of the land. In fact, the spirit of the original Holi festival was in the ritual of cleansing and purifying the atmosphere to ward off the impending danger of falling sick due to change of season.

Vedic people, therefore, thought of a ritual which was a remedy for the danger ahead. It was a two-day celebration wherein the rituals adopted by the Vedic men were scientific, eco-friendly, and socially sound.

The playful throwing of natural coloured powders on each other had a medical significance. The basic powder would come from tapioca and sago. The colours were traditionally made of neem and bilva leaves, kumkum and haldi, and with the flowers of palash, also called taysu or the flame of the forest, aparajita and marigold. Powdered and fragrant red sandalwood, dried hibiscus flowers, and pomegranate were alternative source of different shades of red. Mixing lime with turmeric created an alternative source of orange. The powder was sometimes combined with mica powder to create a twinkling effect.

Unfortunately, chemically produced industrial dyes and fake abir and gulal powders have replaced the natural colours. Medical reports confirm the harmful effects of such colours on the human body.

Another scientific reason for celebrating Holi is the tradition of Holika Dahan. When the Holika or bonfire is torched, its temperature rises to about 1450 F, destroying the bacteria present in the atmosphere. Following the Vedic tradition, people are supposed to perform three or seven parikramas or circumambulations around the Holi bonfire; this kills the bacteria in the body.

In Holika bonfire, earlier only cow dung and timber of certain ecofriendly trees - arrad, redi, mango and palash – were used. The bonfire was ignited not by matchsticks but by reciting mantras at the exact mahurat when the moon completely turned full, to announce the commencement of chaitra month of the Hindu calendar. Since Holi also marked the beginning of the rabi

agricultural season, freshly harvested grains, dry fruits and withered leaves were used as ahuti or offerings into the Holika bonfire. The smoke of the cow dung emitting from the bonfire was not only non-poisonous and eco-friendly, it also killed the bacteria in the air, owing to the high phosphorus content in it.

The festival of Holi has cultural and social significance too. It is a festival to end and rid oneself of past errors and mutual conflicts by meeting, greeting and embracing others. Thus, Holi is a festival of friendship and forgiveness, meant to create harmony in the society while simultaneously flushing out stagnant winter negativity.

Immediately, after three full days past after Holi, a minor but very significant day, known as basauda, meaning stale food, is observed, particularly in north India. The significance is that after this day, it was prohibited to consume stale food. It was calculated that bacterial germination in cooked food would start taking place with effect from the day of basauda, owing to weather conditions (obviously, no refrigerators were there when this tradition was

introduced). The lady of the house would cook festive food on the eve of basauda, and the entire family would consume the same food the next day. Thereafter, stale food was not to be consumed until the onset of the next winter. Such old and significant traditions show that the ancient Indian rituals are not mere dogmas, but are based on pure scientific reasoning.

Significance of Akshaya Tritiya

According to the Hindu theory of creation, kaal or time) is a manifestation of God. The past, present and future all coexist in Him simultaneously. Therefore, God as kaalpurush is timeless and beyond its realms. According to Hindu thought, creation begins when God activates both His positive and negative energies; and it ends as He withdraws them into a state of inaction. Another important aspect of the Sanatan dharma theory of time is that time moves in a cyclical manner, commonly referred to as kaalchakra. The end of one cycle is the beginning of another – therefore, there is actually no end to creation. In a particular cycle of time, there are

some timespans when God’s positive energies are hyperactive. Such periods, when nature’s positive energies are supercharged are known as mahurats or auspicious timings. Traditional Hindus believe in this theory of auspicious timing and follow it in every station and walk of life – be it to begin a new venture or making an important purchase.

Akshaya tritiya is one such momentous occasion. This tithi or date is considered one of the most auspicious days of the Hindu calendar. Akshaya tritiya is also known as akhateej. In Sanskrit, the word akshaya means imperishable or eternal or that which never diminishes. Akshaya tritiya is a holy day in the Jain calendar as well.

Ventures launched or valuables bought on this day are considered to bring success or unending good fortune. Associated with material gains and wealth acquisition, buying gold is a popular activity on akshaya tritiya, as it is the ultimate symbol of wealth and prosperity. Gold bought and worn on this day signifies never-diminishing good fortune. Hindus celebrate weddings, begin new

business ventures, and even plan long journeys on akshaya tritiya.

This golden day falls on the third day of the bright half of the Hindu month of baishakha (April-May) when astrologically, the sun and the moon happen to be in exaltation and are simultaneously at the peak of their brightness, which occurs only once in a year. Nature's positive energies are hyperactive on this day, making each second of this day auspicious. It is hence a full mahurat day and if akshaya tritiya falls on rohini nakshatra, on a Monday, it becomes even more auspicious.

The myths around akshaya tritiya are that the day marked the beginning of the Treta Yuga (7000 BC), the second of the four yugas. According to the Puranas, sage Vedavyasa, along with Lord Ganesha, started writing the great epic Mahabharata on akshaya tritiya. According to another legend, when the Pandavas were in exile, Lord Krishna presented them on this day with an akshaya patra, a bowl which would never go empty, and would produce an unlimited supply of food on demand.

Perhaps the most famous of the akshaya tritiya stories is the legendary friendship between Lord Krishna and his poor Brahmin friend Sudama. On this day, as the tale goes, Sudama came over to Krishna's palace in Dwarka to request him to redeem his poverty. However, Sudama could not bring himself to make this particular request to Krishna. After spending the day together and reliving happy moments of their childhood days, Sudama returned home the next day to find that in place of his humble hut stood a magnificent palace, his wife looking resplendent in fine clothes and jewellery, and his children dressed likewise. Fine artifacts, furniture, gemstones and servants too added glamour to his new and beautiful house. Sudama realized that although he hadn't been able to voice his innermost desire, the gracious Krishna had understood his predicament and blessed him thus.

Balarama Jayanti is also observed on this day. Lord Balarama is also referred to as one of the dashavataras or ten incarnations of Lord Vishnu. Lord Parashurama is also said to have been born on akshaya tritiya.

The festival of akshaya tritiya is dedicated to Lord Vishnu. Worshipping Lord Vishnu on this day eradicates and removes sins, and makes one free from all sorrows. Tulsi water is sprinkled in the area immediate to the idol of Lord Vishnu while performing his arati. The Puranas state that devotees who perform the Sri Maha Vishnu puja on akshaya tritiya may attain salvation. In some regions, devotees fast on this day. As per the Puranas, giving away of hand fans or pankhas, rice, salt, ghee, sugar, vegetables, tamarind, fruits and clothes on akshaya tritiya is a very important aspect of the festival. In some regions of India, devotees perform tulsi puja on akshaya tritiya.

In Orissa, akshaya tritiya marks the advent of the agricultural season when farmers start cultivating their land, while construction of chariots for the rath yatra begins at Puri. In Bengal, hal-khata, a ceremony involving the use of new audit books, is performed with the worship of Ganesha and Goddess Lakshmi. Bengalis perform many rites and rituals on this day.

Akshaya tritiya is generally observed by fasting and worshipping Lord Vasudeva, another form of Lord Vishnu, with rice grains. A dip in the river Ganges on this day is considered to be favourable.

The trend nowadays, however, is to spend this propitious day in purchasing gold and diamonds rather than observing fast or doing charity or pujas. Gold and diamond dealers do brisk business by offering alluring rebates on purchases on this day.

Shivaratri: The Night to Receive Shiva's Blessings

In ancient Indian tradition, the night is considered more conducive than the day for spiritual sadhana. The navaratris for Shakti puja, Diwali for Lakshmi puja, and Holi for mantra siddhis are such special and well-known nights of the Hindu calendar. These nights are auspicious because a certain astronomical configuration occurs annually at this time of the year.

Scientifically too the nights are regarded better than days because during the day, the sun’s rays cause resistance to earthly vibrations to rise higher into the outer space. This is the reason why yogis prefer to do their sadhana during the night hours so that the vibrations emanating from their sadhana mantras can drift upward to the desired higher planes of the astral world. It is commonly experienced that radio signals are received and heard better during nights because of the absence of sun’s rays.

On account of the distinct astronomical occurrence, certain favourable divine vibes, obviously invisible but in abundance, descend on earth from Shivalok, one of the spheres of the outer space, on the night of Shivaratri, to bless devotees who remain awake and pray to Shiva during that night with a focused mind.

It may surprise many to know that there are in all twelve Shivaratris, one in each month of the Hindu calendar. The Shivaratri falling on the 03th/04th night during the krishna paksha, in the Hindu month of phalguna, is, in fact, the Maha Shivaratri,

which normally falls in February or early March, as per the Gregorian calendar. On this day, the planetary position in the northern hemisphere acts as a potent catalyst to help a person raise his spiritual level. It is also believed that the gains or benefits that one receives from the recitation of Lord Shiva's death-averting mahamantra, the maha mrityunjaya, are received manifold by devotees on this night.

Traditionally, the ideal time for performing Shiva puja on Shivaratri is the nishith kaal. It is during this time that Lord Shiva appeared on earth in the form of a lingam. In south India, on this day, the most auspicious lingabhava puja is performed in all Shiva temples.

The important components of Shivaratri are rigid fasting for twenty-four hours and sleepless vigil during the night, singing songs in Shiva's praise, doing kirtan or collective singing, chanting aloud 'Om namah Shivaya' and 'Har har Mahadev'. A true devotee of the Lord spends the night in deep meditation while observing a fast and keeping a vigil. Because of the distinctive planetary position in the sky during the night of Shivaratri, there is a natural upsurge of

divine energy in the human system of those who are awake and focused on Shiva, which is beneficial for one's physical and spiritual well-being.

There are certain rituals, according to the Shiva Purana, associated with Shivaratri:

- Abhisheka or bathing of the Shiva lingam with holy water, milk, curd and honey. This act of the devotee ensures purification of his own soul.
- Application of vibhuti and vermillion on the lingam and placing of wood apple and belpatra. This act is aimed at receiving virtue.
- Lighting a lamp with ghee made from cow milk in front of the lingam for attaining knowledge.
- Burning of incense in front of the lingam for attaining wealth.
- Offering betel leaves on the lingam to gain satisfaction from worldly pleasures.
- Offering seasonal fruits on the lingam for contributing to longevity and gratification of the devotees' desires.

It is believed that Lord Shiva is constantly burning with the fire of austerity. Therefore, of all the above rituals, the abhisheka pleases Shiva the most. Hence, only such items are offered to him that have a cooling effect such as coconut water, Gangajal, ghee, honey, milk, curd and water from the seven seas or seven rivers.

As on Shivaratri, the Shiva tatwa or the vibrations from Shivalok descend on earth to bless his devotees. Similarly, on Guru Purnima day, which falls on the day of purnima or full moon in the month of ashadha (June-July), the guru tatwa or radiations from the planet Jupiter descend on earth. The guru tatwa is said to be a thousand times more active on this day than on any other. People go to their true spiritual guru and perform guru puja to receive his blessings.

In both cases, Shivaratri and Guru Purnima, faith in the tradition and sincerity in performing the rituals with a focused mind are of paramount importance.

The Divine Alchemy of Kumbh

The tradition of kumbh mela is most ancient in India. It is older than Lord Rama and Krishna. The roots of this ritual are deeply connected to man's inborn craving for happiness, prosperity, fame, good health, well-being, enlightenment and immortality. The Vedas, Puranas, and other texts are full of references to it. Enlightened saints and sadhus tell us that most Puranic tales are written in a code language through which universal truths are revealed to laymen.

The kumbh too can be traced back to one such tale, which is associated with the samudra manthan or the churning of the ocean. This event is described as an alchemical process through which the first to emerge was poison, which was consumed by Lord Shiva, followed by mind-boggling divine attributes of health, wealth, beauty, power, auspiciousness and immortality in the form of nectar or amrit that surfaced from the sea.

Samudra manthan is considered the source for the origin of kumbh. When amrit rose from the ocean, Vishwakarma, the divine architect, created a magnificent kumbh or pot to contain it. This amrit kumbh attracted all who were present. A struggle of epic proportions ensued between the suras or devas or divine beings and asuras or demonic beings for the amrit kumbh as they all wanted to drink from it and become immortal. During the battle, a few drops of amrit spilled at four different places, at four different times. The kumbh mela is, therefore, celebrated at those four places when the same zodiacal position repeats itself.

The moon, the sun, Jupiter and Saturn - all teamed up to protect the amrit kumbh from the asuras. The moon helped in preventing the amrit from spilling out; the sun helped by protecting the kumbh from splitting or breaking; Jupiter prevented the asuras from snatching and fleeing with the amrit kumbh; while Saturn assisted the sun by instilling the fear of Indra - the king of the devas - in the minds of the asuras.

The sun, who is ruled by agni tatwa or fire element, and the moon, who is ruled by the soma tatwa or water element, together control the activities of the entire universe. Both the microcosm and macrocosm are sustained by agni tatwa and soma tatwa. Our entire metabolism, catabolism and anabolism are sustained by the sun and the moon, which are represented in the physical body as two very important nadis or flows of energy - the pingala and the ida. These two nadis are essential not just for the physical and mental activities of man but for his spiritual enlightenment as well. This clearly explains why, in the story of samudra manthan, the sun and the moon are depicted as the foremost protectors of the kumbh.

As per the story, when the amrit kumbh was carried by the gods, some amrit fell off from the kumbh at Haridwar, Allahabad, Nashik and Ujjain.

These planetary positions recur after a lapse of six years and twelve years and that is when the ardha or half kumbh and purna or full kumbh are held.

These four places are: Prayag, where the Ganga, Yamuna and Saraswati confluence; Ujjain, where flows the river Shipra; Nashik, where originates the river Godavari; and Haridwar, where the Ganga touches the plains when coming down from the mountains.

The kumbh is held at Prayag, in Allahabad, when Jupiter enters Aries, and the sun and moon enter Capricorn. In Haridwar, at the foothills of the Himalayas, the festival is held when Jupiter is in Aquarius and the sun is in Aries. It is held at Ujjain, in Madhya Pradesh, when Jupiter is in Leo and the sun in Aries. In Nashik, in Maharashtra, the kumbh is held when both Jupiter and sun are in Leo.

The maha kumbh is held every twelve years as the struggle between the divine beings and the demons for the amrit kumbh lasted for twelve days, which equal twelve human years. The exact period of the kumbh is determined by nakshatra or constellation, tithi or day as per the lunar calendar, and the movement of planets to form special alliances. According to the calculations of

astrologers and astronomers, the exact position that the planets had held during the samudra manthan, when the drops of amrit fell, occurs once in every twelve years. Lakhs of devotees take a dip in the waters of these rivers at the kumbh mela as during that period, a nexus of cosmic energies converges at that spot and charges the waters, bringing a dramatic change in the destiny of the devotees.

Kumbh: The Redeemer of Sins

Besides the spiritual, cultural, sociological, ecological and economic significance, the kumbh mela is also a very important event from the psychological point of view. Although every man is essentially pure and untainted, he knowingly or unknowingly sins and is often riddled with guilt during the course of his life. This causes severe aberration in his personality, relationships, lifestyle and mental outlook. The feeling of having sinned is very difficult to erase. No amount of counselling, reasoning, or medical treatment can reach those areas of the mind where sin and guilt lie hidden.

Sin is not an act: it is a deeply rooted notion or belief. Crime is an act and it is defined by law. But what about the thought of having sinned? How can that be handled? One is struck by the guilt of sin if the notion of past karma is attached to this idea. This is far more difficult to manage. It is in this area of psychological treatment that the kumbh works wonders. The same wonder works behind the Christian practice of 'confession', which eradicates the feeling of guilt.

People also go to the Ganga to seek forgiveness for their sins, imaginary or real. Since time immemorial, the majestic and peaceful Ganga has held the power to absorb and wash away the sins of all who bathe in her waters.

These include sins committed in past lives that we are not even aware of, but which are embedded in the deeper layers of our consciousness in seed form as samskaras. The purity of Ganga absorbs all these and it is for this reason that a dip at the kumbh enables man to churn his karmas or perform manthan karma, whereby the speed of his evolution is hastened.

Today, ecologists all over the world are trying to generate awareness about the need for conserving the environment. If we do not pay heed to their warnings, we stand to lose many things, including the chance to live.

The tsunami of 0005 was one such act of nature that warned man of the consequences of taking nature for granted. The tradition of kumbh should impress ecologists as it achieves just what they are trying to do. Man does not learn through dictums and laws: he has a natural inclination to revolt against them. He follows them only out of fear. Fear does not transform an individual; it only keeps his baser instincts in abeyance till such time when he can do what he wants. Our rishis and munis understood the inherent nature of man. They were the original ecologists. They gave man a reason to worship nature by sanctifying it and revealing its role in the evolution of mankind. Handed down from generation to generation, this belief has become a part of India' psyche and inherent faith.

It is said that during the period of kumbh, apart from all the divine beings, all astral rishis and munis assemble to bless us. Their

presence, together with the planetary conjunctions, surcharges the atmosphere, creating an energy field to redeem us from our sins.

The kumbh is the largest congregation of its kind known to man, for which it has found a place in the Guinness Book Records. The mela is not for Hindus alone; it is for anyone and everyone who desires happiness, prosperity, good health and enlightenment. It is thus a secular event for all mankind.

In yoga too we find reference to the kumbh. In the practice of pranayama, there is a term called kumbhakavastha. This is that state when breath is neither drawn in nor expelled but is held suspended within. This is the main part of pranayama through which prana shakti or the life force is transformed as well as channelled, and the dissipating tendencies of the mind are destroyed a sort of mental manthan or churning of the mind.

Ancient civilizations paid obeisance to all forms of nature, including ravens. Many cultures have now lost this awareness. Vedic

literature is abundant with the most beautiful prayers to rivers, trees, the air and all other life-giving attributes of Mother Nature. This is because the Vedas believe that nature is not inert; it moves, it listens, it feels and it speaks because it has many things to tell. But most importantly, it creates energy fields, which we can avail of through worship, love and care. This acknowledgement of the sentience of nature is an essential part of all Vedic and tantric scriptures.

The Vedic lineage believed that man does not have proprietary rights to knowledge; rather, he is only its guardian. He is the preserver, not the owner. The knowledge that in the kumbh, certain planetary conjunctions charge a particular area and waterbody with divine energy was known to Vedic seers long ago.

Rishis of great spiritual power such as Yajnavalkya, Bharadwaja, Vashishtha and Vishwamitra bathed at Prayag. Even today, sadhus and householders observe kalpa vaas or a month-long vow at Prayag during kumbh. For this period, they have their abode on the

banks of the Ganga and follow strict observances. One of the great emperors of India, Harshavardhana, who lived in the early seventh century (AD 606-38), patronized the kumbh mela and also performed kalpa vaas at Prayag. He gave away all his wealth and assets to the poor, slept like a beggar on the bare floor during his stay at Prayag, and returned to his kingdom empty handed.

The Hindu genius had the firm belief that a bath at the kumbh is no ordinary event, as it removes obstacles in man's progress towards supreme achievements in his life. But to receive the intended result, a correct and untainted approach has to be taken. Sadly, such an approach is impractical in our present-day life where time flies faster than a jet.

Significance of Navratri

Navratri means 'nine auspicious nights'. During this period of nine nights, different forms of Goddess Durga, the cosmic female energy, is worshipped. Ma Durga, as she is popularly referred to, is the amalgam of the effulgence of all the major gods, including the

Hindu trinity of Brahma, Vishnu and Maheshwar. The Devi is beautiful, bountiful, terrifying, compassionate and ruthlessly righteous. She is Durga and Kali in Bengal, Ambika and Bhadrakali in Gujarat, Vaishnodevi in Jammu and Kashmir, Chamunda in Karnataka, Santoshi Ma and Bhavani in Maharashtra, and Kamakhya in Assam. To most of us, she is just ‘Ma’, the Universal Mother.

The 700 verses of the Devi Mahatmyam, also called Durga Saptashati of Markandeya Purana, is recited daily during the navratris. The mantras invoking Ma Durga are repeated using a haldi mala or turmeric garland.

She is hailed as the very origin of all the worlds. As per Hindu thought, there are three worlds and she is hailed as the originator of all the three as the female energy which gives birth to creations in the world. She is said to have all the three gunas of satva, rajas and tamas - purity, passion and inertia.

The ancient Indian social scientists - the rishis and munis - held certain nights of the year to be more conducive for practising spiritual sadhanas as compared to days. Some of these special nights are the nights of Dipawali, Shivratri and Holi. These nights and the nine nights of navratris are very special for spiritual growth and also for carrying out black magic practices.

Why are these nights so special, particularly, the navratris? The reason is that they fall during the time when the astrological and astronomical position of our country in the Milky Way is such that it allows our prayers and sadhanas to reach astral regions faster and without being distorted.

Modern science also acknowledges that all human thoughts have electromagnetic energy. After sunset and during night, nature releases our thought energy into the astral region and it returns duly charged around dawn. During the day, due to the sun’s rays, our thought energy cannot rise high enough into the atmosphere, hence nights are more suited. During the navratris, however, our thoughts rise higher into the astral world as compared to other nights.

The navratris occur twice in a year. The first is at the onset of the Vikrama era, the Hindu calendar followed in north India, in the month of chaitra from the first tithi or day of the shukla paksha of the month up to navami, the ninth day. The second occurrence comes exactly six months later, just before the winter. Thus, the two navratris fall at the time of the turning of seasons when the sun's rays are mild and soft, and they cannot much distort the thought energy. Spiritual practice during the navratris, when sincerely carried out, reach the desired destination faster.

Navratris have another aspect that makes them significant. It is a phenomenon of nature that when seasons change, the inner chemistry of human beings also changes. Observing fast during these periods keeps one healthy. The navratris provide people a religious reason to observe fast which helps one to gain at two levels: one at the physical level, and the other at the subtle spiritual level.

RITUALS: PUJAS & YAGNAS

Why Are Yagnas Performed?

Yagna or havan is an integral part of Vedic culture. The worship of fire has a deep philosophy behind it. The Aryans wrote the Vedas and the first word in the Rig Veda is agni or fire.

Yagna is based on the science of agni. According to the science of fire, whatever substance we offer into it is reduced to ashes, and its subtle elements turn gaseous and expand to soar high into the atmosphere and beyond. Before offering any article or substance into the havan kund, the pit made into the ground or made of metal for the purpose of making offerings to the god of fire, it is charged with a mantra and thus guided towards a particular deity by naming it. Our oblations are consequently received by the forces of nature. Like the ancient rishis, NASA (National Aeronautics and Space Administration) scientists have also discovered that substances expand when heated. These scientists observed that when they

fired rockets, the volume of the pre-recorded voices in the missiles automatically increased (Source: Kundalni Aghora-II by Robert E. Savoda, p. 33, 1993, Rupa & Co), which confirmed the truth in the ancient belief that things enlarge when they burn.

Mantras and the havan kund were two important constituents of fire worship in olden days, when havan kunds were prepared after due deliberations, and with great care. The size and shape of a havan kund differed from person to person. The shape and size of bricks to be used for preparing the havan kund were in accordance with the vital statistics of the person who would perform the yagna, after employing the principles of Vedic mathematics and geometry.

As per the maxims of ancient geometry, there were ten different shapes and sizes of havan bricks. The maxims of ancient geometry known as Sublabha Sutra are very old and date back to the eighth century BC. In 0975, a yagna based purely on ancient tradition was performed in Kerala for which one thousand bricks were used to construct the havan kund. It was reported that the yagna produced the desired result (Week, August 1975).

Pieces of wood, ghee, herbs, grains and other articles used for offering into the fire are chosen very carefully. All the selected items are not only eco-friendly, but also air purifiers. And once these substances are reduced to ashes, they turn into a potent medicine and are distributed to devotees as bhasma prasadam which is applied on the forehead, and a pinch of the holy ash is consumed. The wood of only such trees and plants is used which does not emit poisonous gases and the resultant ash is agreeable to human beings when consumed or applied on the person. Only ghee made from cow milk, specified herbs, dry fruits and some other articles are offered into the fire while conducting a yagna.

Besides these, certain favourite items of a particular deity are also offered to the fire, e.g., pieces of sugar cane are offered in Ganesha havan, while kheer - a milk and rice pudding - is offered in Vishnu havan. Linseeds are offered in the havan held for ancestors. These articles are consigned to the fire after reciting the name of a particular deity or ancestor. These substances are reduced to gases and ash by the fire. Since astral bodies have a very keen sense of smell, they accept our offerings in the form of fragrance and odour.

There are certain rules and restrictions for both the priest conducting the yagna and the person performing it. Both have to abide by the prescribed code of conduct: maintain celibacy, avoid getting angry, speak less, sleep on the floor, control intake of food, and so on. The science behind such a code is that it makes a man physically receptive and sensitive to divine blessings and to conserve energy.

In ancient days, the festival of Holi was a collective yagna performed by the entire community of a village on the full moon night of the Hindu month of phalguna. Holi marked the end of winter and the advent of summer. The Holi yagna was intended to purify the atmosphere. It is believed that the fumes of cow dung fire protect people against harmful radiations. According to certain scholars, it was a special day for fire worshippers. Only cow dung cakes were used to make a fire and dry fruits, tender grains of wheat and green grams were offered to it. The yagna fire, unlike today, was ignited not through any matchstick, but through mantras.

The bonfire was lit exactly when the moon attained its full glory of purnima. The precise moment was calculated by astrologers using Vedic mathematics.

The present character of this festival has radically changed, and what we see today is only its corrupted and distorted form. In the olden days, curd, cow dung and colours extracted from vegetables and flowers were used to play Holi, unlike today, when chemical colours are used, with severe side effects.

Why Is a Kalash Installed Ceremoniously during a Puja?

The kalash or pot plays a significant role in most of our rituals and pujas. Also known as kumbh in certain parts of the country, it is a pot made of brass, copper, or clay that is filled with water from seven rivers, seven wells, or seven seas. The pot could even be filled with water from any single source or filled with unbroken grains of rice together with nine or eleven mango leaves

surrounding a coconut placed on its top. Red or white cotton thread is tied around the pot in an intricate diamond-shaped pattern, and the pot may even be decorated with auspicious signs and designs.

A kalash is placed with due rituals before all important auspicious occasions like weddings, *grihapravesh* - the house-warming ceremony - and *navratri puja*. It is also ceremonially used while receiving holy personages. Sometimes, a kalash is placed near the entrance of the house to welcome honoured guests.

According to legend, before the world was created, Lord Vishnu lay reclining on his sheshanaga shaiyya or serpent bed in Ksheersagar or the milky ocean. A lotus emerged from his naval and from this lotus, Lord Brahma, the creator of this world, appeared. The water in the kalash symbolizes the primordial water from which Lord Brahma and the entire creation came into existence. The coconut fruit placed at its mouth represents the head of the devotee. The mango leaves arranged around the coconut are meant to attract divine vibrations from the astral world to bless the devotee and to

divinize the water or the rice filled in the kalash. When rice is filled in it, it is called purnakalash. The rice that is filled in the pot is known as akshat or unbroken grains of rice, symbolizing eternal blessings on the devotee and his family. The akshat - that which will not exhaust - rice has the unique quality of being able to absorb the negativity that is in the environs. The kalash is, therefore, considered auspicious, and is worshipped. While worshipping the kalash, the blessings of all the seven rivers and deities, including those of Lord Vishnu, are invoked. After the puja, its water is used for all the rituals, including the abhisheka or divine bath.

The consecration of an idol or of a temple carried out using the kalash is called kumbh abhisheka, and is done in a grand manner with elaborate rituals, including the pouring of holy water from one or more kalash over the head of the idol or the shikhar or dome of the temple.

What Is the Significance of Lighting a Lamp while Performing Rituals?

In all religions of the world, ‘light’ universally symbolizes both the Almighty and knowledge. It is the very source of all life in the universe and, therefore, light is worshipped as the Supreme Lord himself, the enlivener and illuminator of all knowledge. Similarly, just as light removes darkness, knowledge dispels inner ignorance. True knowledge is an unending, ever-growing wealth by which all outer objects can be acquired.

Hence, we light a lamp to bow down to and acknowledge light and knowledge as the greatest of all forms of being that exist on this planet.

In traditional Indian homes, a lamp filled with pure ghee is lit daily before the altar of the Lord. In some houses, it is lit at dawn; in some twice a day, at dawn and dusk. In certain homes, it is kept lit twenty-four hours of the day. Such a lamp is known as akhanda

jyoti or deepam. All auspicious functions commence with the lighting of a lamp, which is considered as a propitious beginning for any ceremony.

When a lamp filled with pure ghee from cow milk is lit, it attracts divine or positive vibrations from the atmosphere and divinizes the place. This ghee, on evaporating, has the potency to attract positive vibrations which is its unique property. It is for this reason that only ghee lamps should be lit for gods and on auspicious occasions. But, nowadays, we are unmindful of this tradition and use oil instead. Oil lamps are used for the arati of a person and not of a deity as oil has the property to ward off negativity but does not attract divine vibrations. When a war hero returns, or when a bridegroom goes for marriage, the lady of the house performs his arati with an oil lamp to ward off the evil eye.

A lit lamp has a spiritual message. The ghee in it denotes human vasanas or desires and negative tendencies whereas the wick in it symbolizes man's ego. When it is outwardly lit - when a man mentally concentrates on the Supreme Lord - it is an inward action,

but when he lights a lamp outside, it becomes an outward action; it removes negativity and attracts divinity.

When it is lit within, through knowledge, it destroys the vasanas from their very root and gradually, the ego is decimated. The flame of a lamp always burns upwards and that inspires us to acquire such knowledge that will take us towards higher goals, ideals and noble deeds.

In traditional homes, a candle or bulb is not lit before the altar as it does not have the potency to create the desired effect. It is, however, an unpleasant truth of the modern age that we resort to short cuts as it is convenient but, in reality, these short cuts will not yield any tangible results except the psychological satisfaction of being religious.

According to a recent research (Source: 238th National Meeting of the American Chemical Society held in September 2007) carried out in the US, candles made from paraffin wax are harmful for humans. This is because the chemicals released by these candles discharge

substances such as toluene and benzene, which cause cancer and can affect the nervous system.

However, beeswax candles, apparently, do not release harmful air pollutants and are comparatively safer.

Interestingly, thousands of years ago, Indian seers and saints studied in depth the effects of air pollutants released by lamps filled with different types of oils and ghee. They found that ghee from cow milk, mustard oil and coconut oil were agreeable to humans, in that order. Other oils were found to be unsuitable.

Why Do Hindus Perform the Aarti?

There are sixteen items - shodasha upachara - in a puja and aarti is one of these. Normally, aarti is performed towards the end of ritualistic worship and also to welcome a holy person or an honoured guest. During a puja, the arti is always accompanied by the ringing the ghanti or bell, musical instruments, singing and clapping.

Aarti for a deity is observed with a ghee lamp and camphor. This holds spiritual significance: when lit, camphor completely burns itself without leaving any trace of its existence, and this symbolizes complete decimation of one's ego or self. While the camphor burns, it emits a pleasant perfume.

In our spiritual progress, as we serve the guru, parents, elders and society we too should willingly surrender ourselves so as to spread the perfume of love to all. This is the philosophical explanation of the ritual.

However, scientifically, there is a different explanation to it. The

images in traditionally enshrined and celebrated temples where regular pujas are diligently performed according to scriptures have a definite divine aura around them. When the arati of such enshrined images is done, their aura expands due to heat and all those who are present receive divine vibrations and gain spiritual strength. For this reason, it is always advocated that one must attend the arti because the atmosphere in the temple is especially charged with enhanced positivity and one receives divine vibrations or blessings even without asking.

At the end of the Aarti, we place our palms over the arati flame, then gently touch our eyes and the top of our head. While doing so, we mentally pray: “May the light that illuminated the Lord light up our intellect; may our vision be divine and our thoughts noble and well meaning.”

On the other hand, the arati of an individual is carried out for a different reason, with a different medium – oil - and on different occasions such as for a newly wed couple or a newly born child on his namakaran or naming ceremony, or a brother on the occasion of

Bhai Dooj, a day when a sister goes to her brother's house to wish him well, or the husband on Karva Chauth, a day when a wife fasts for the long life of her husband, or hero when he returns from war. It is an established fact that all humans have an aura which may be affected by the evil eyes of jealousy, or by the negative thoughts of another person. Performing the arati of individuals wards off such ill effects. However, oil lamp is used for an individual's arati and not a ghee lamp. This is because oil, particularly of mustard and linseed, has the power to ward off negativity cast by the evil eye of another person. Ghee from cow milk, on the other hand, has the potency to enliven a god's image or idol.

Written by Lt. Cdr. K.V. Singh who served in the armed forces for thirty years, authored a number of books in English and Hindi. In addition to being an anchor and participant in numerous television programmes, he is currently the CEO of Flag Foundation of India.

Mr. Dinesh Tandon is an active member of IKMG Ltd. He is now retired from Bank's Service and is based at Kanpur.

तू मानव

लेखिका - श्रीमती पूनम टंडन, शाहजहाँपुर

जिंदगी को जी उसे समझने की कोशिश न कर

सुन्दर सपनों के ताने बाने बुन

उसमें जबरदस्ती उलझनें की कोशिश न कर

चलते वक्त और आज के दौर में तू भी चल

उसमें सिमटने की कोशिश न कर

अपने हाथों को पंखों की भांति फैला खुलकर सांस ले

परन्तु अन्दर ही अन्दर घुटने की कोशिश न कर

अन्तर्मन में चल रहे उन तूफानों को युद्ध का विराम दे

ख़ामख़ाह खुद से लड़ने की कोशिश न कर

जो भी मिला उसी में खुश रहो

जो सुकून किसी के द्वारा छीना गया

उसे पाने की कोशिश न कर

रास्ते की खूबसूरती का लुत्फ उठा

मंजिल पर पहुंचने की जल्दी न कर

सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर देख

मंजिल खुद ब खुद मिलेगी

ईश्वर पर भरोसा रख राह खुद ब खुद निकलेगी

Mrs. Poonam Tandon resides in Shahjahanpur and enjoys writing poems in her leisure time.

वक़्त बदलता है

लेखक - श्री सुशील मेहरोत्रा, मुरादाबाद

रायबरेली ज़िले में स्थित एक गांव- बछरावां जिसकी आबादी लगभग ५००० थी। ठाकुर बाहुल्य गांव था और वहां कई बड़े जमींदार थे। वहां के सबसे बड़े जमींदार ठाकुर रघुराज सिंह थे। उनकी और उनके परिवार की कई सौ एकड़ जमीन थी। गांव में काफी संख्या छोटे कास्तकारों और भूमिहीन किसानों की थी जो दूसरों के खेतों में काम करके अपना जीवन यापन करते थे। उन्ही भूमिहीन किसानों में एक बुधुआ भी था, उस पर कोई अपनी खेतिहर जमीन तो थी नहीं बस दूसरों के खेतों में मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और एक ४ वर्ष की लड़की थी जिसका नाम उन्होंने उषा रखा था। वह दोनों की आँखों का तारा थी, औरों की तरह वह भी अपनी बेटी को बहुत कुछ देना चाहते थे परन्तु प्रारब्ध के आगे किसी का ज़ोर नहीं है। कहते हैं कर्मों से ही प्रारब्ध बनता है। इस जन्म में तो उन्होंने बस गरीबी ही गरीबी देखी थी। लोगों की दासता, सेवा ही उसका जीवन था। फिर किन कर्मों से उसका यह प्रारब्ध था यह तो ईश्वर ही जाने। अपने काम को पूरी ईमानदारी , मेहनत से करना ही उसने अपनी नियति , अपना भाग्य मान लिया था।

बुधुआ ज्यादातर ठाकुर रघुराज सिंह के खेतों पर ही काम करता था। कभी कभी जरूरत पड़ी तो उसे अपनी कोठी पर भी काम पर बुला लिया जाता था। ठाकुर साहब उसकी मेहनत और लगन से बहुत खुश थे।

ठाकुर रघुराज सिंह यद्यपि बहुत बड़े जमींदार थे, उनके पास करोड़ों की सम्पति थी, बहुत आमदनी थी फिर भी वह बहुत विनम्र और लोगों की हमेशा मदद के लिए तैयार रहते थे। आज भी बुधुआ जब थका हारा आया तो उसने उषा को घर पर नहीं देखा। घर आकर उषा को देखकर वह अपनी सारी थकान भूल जाता था। उधर उषा नीम और आम के वृक्षों के नीचे बैठी अकेली खेल रही थी और अपनी फ्राक में निम्बोली बीन बीन कर रख रही थी। जब माँ ने पुकारा तो वह दौड़ती हुई चली आयी। फ्राक में रखी निम्बोली माँ को दिखाकर बोली कि जब भूख लगेगी तो इसे खा लूंगी, सुनकर दोनों द्रवित हो गए। उसकी फ्राक भी फट गयी थी वह इस इंतज़ार में था कि कहीं कुछ रुपये मिल जाएँ तो उसे नयी फ्राक लेकर दे दे। उन्हें अपनी गरीबी से कोई दुःख नहीं था बस दुःख था तो इस बात का कि वह अपनी बेटी की छोटी से छोटी इच्छा भी पूरी नहीं कर पाते थे।

ठाकुर रघुराज सिंह के घर में कई नौकर चाकर थे। उन सब पर निगरानी की जिम्मेदारी घर के सबसे पुराने नौकर रतिराम की थी। घर का कोई काम हो चाहे अंदर का या बाहर का सब उससे ही कहते थे। वह ठाकुर साहब का जैसे दाया हाथ था। घर के बच्चे भी उसे काका ही कहते थे और वह उन पर निगाह भी एक बुजुर्ग की भांति ही रखता था। एक रात कोठी में चोरी की नियत से चोर घुस आये, उन्होंने घर से काफी रूपया, जेवर चुरा लिया और कोठी से बाहर निकल आये। रतिराम कोठी में बाहर बने कमरों में रहते थे। आहट सुनकर उन्होंने जैसे ही देखा उन्होंने शोर मचा दिया।

शोर सुनकर चौकीदार और अन्य लोग आ गए, चोर वहां से भाग लिए। जब रतिराम ने उनका पीछा किया तो उन्होंने उसको लाठी मारकर घायल कर दिया। चौकीदारों द्वारा पीछा करने पर चोर सारा सामान बाग़ में बने एक गड्ढे में छिपाकर भाग गए। बहुत ढूंढने के बाद भी सामान नहीं मिला। इधर चोट लगने से रतिराम की तबियत बहुत ख़राब हो गयी। बहुत इलाज के बावजूद वह ठीक नहीं हुए और उनकी मृत्यु हो गयी। ठाकुर साहब और उनके परिवार के सभी सदस्यों को उनकी मृत्यु का बहुत दुःख हुआ। उनकी मृत्यु से घर में एक विश्वासपात्र सदस्य की कमी हो गयी थी।

एक दिन काम पर जाते हुए उषा भी बुधुआ के साथ खेतों पर आ गयी। वह पास के बाग में खेलने लगी, खेलते खेलते वह एक गड्ढे में गिर गयी और रोने लगी। उसकी आवाज सुनकर बुधुआ दौड़ता हुआ आया और उसने उषा को बाहर निकाला। अचानक उसकी निगाह गढ़े में पड़ी एक पोटली में पड़ी, उसने जब उसको निकाला तो देखा कि उसमें काफी रुपये व जेवर थे। वह समझ गया कि यह ठाकुर के यहाँ चोरी हुआ धन है। वह तुरंत उसे लेकर ठाकुर साहब के पास आया और सारा वृतांत बताया। चोरी गए हुए सामान को पाकर सब लोग बहुत खुश थे। ठाकुर साहब और घर के सभी सदस्य उसकी ईमानदारी से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। एक गरीब आदमी जब लाखों की दौलत से विचलित नहीं हुआ तो उसकी ईमानदारी निःसंदेह अटूट है। उन्हें आज रतिराम की जगह उचित व्यक्ति मिल गया था। उन्होंने बुधुआ से अपने परिवार के साथ कोठी में रहने और वहां काम करने के लिए कहा तो उसे एक बारगी विश्वास नहीं हुआ। उसने अपनी सहमति दी और इसके लिए उनका आभार व्यक्त किया।

कहते हैं देर ही सही कभी न कभी दुर्भाग्य का साया जरूर दूर होता है। बुधुआ के भी दुःख भरे दिन दूर हो गए। वह और उसकी पत्नी कोठी के कामों में व्यस्त रहने लगे। दोनों अपने कामों को बहुत ईमानदारी और लगन से निभा रहे थे जिससे घर के लोग बहुत

खुश थे। बच्चे बुधुआ को भी काका ही कहते थे।

बुधुआ और उसकी पत्नी जब कोठी में होते तो नन्ही उषा भी कोठी के अंदर या बाहर खेलती रहती थी। छोटी होने की वजह से सभी उसे प्यार करते थे। ठाकुर साहब के एक बेटा और बेटी थे, बेटा चन्दन सिंह १० वर्ष का था और बेटी किरण ७ वर्ष की थी। दोनों लखनऊ में एक अच्छे पब्लिक स्कूल में पढ़ते थे। अक्सर जब वह अपने कमरे में होते तो उषा भी खेलती हुई वहां आ जाती और उनको पढ़ते देखकर वह भी उनकी कोई किताब उठा कर पन्ने पलटती रहती। उसे पढ़ने का जैसे शौक था। कोई भी पुराना अखबार, किताब मिल जाती तो वह उसे लेकर पढ़ने बैठ जाती। एक वर्ष पीछे जब ठाकुर साहब ने देखा कि बच्ची की पढ़ने में बहुत रूचि है तो उसका गांव के स्कूल में दाखिला करा दिया। स्कूल में जो कुछ भी पढ़ाया जाता वह वापस आकर सबको सुनाया करती और लोग भी सुनकर आनंदित होते। देखते देखते कई वर्ष बीत गए, उषा अब कक्षा ५ में आ गयी थी और समझदार भी हो गयी थी। वह अब भी अक्सर नंदन और किरण के कमरे में जाकर उनसे कुछ न कुछ पूछती रहती। उन्हें वह भैया और दीदी कहकर सम्बोधित करती थी। एक दिन जब वह नंदन की एक किताब को उठाकर पढ़ने का प्रयास कर रही थी तो नंदन ने कहा -'पगली यह किताब अंग्रेजी में है जो तुम्हे नहीं आती'।

'तो क्या अंग्रेजी बहुत मुश्किल होती है' उषा ने पूछा।

'हाँ, यह हर एक नहीं जानता है। यह सबके बस की बात नहीं है' नंदन ने कहा।

'तुम कुछ और पढ़ो, इसे रहने दो'।

छोटी उषा के मन में यह बात बैठ गयी कि अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के बिना पढ़ाई अधूरी है। उसे लगा कि अंग्रेजी जानने वाले हिंदी पढ़ने वालों से अपनों को श्रेष्ठ समझते हैं। शायद अंग्रेजों की गुलामी करने में ये मानसिकता प्रबल हो गयी थी।

उषा बहुत कुशाग्र बुद्धि थी, स्कूल में भी हरदम प्रथम ही रहती। बुधुआ और उसके परिवार की देखभाल ठाकुर साहब अपने परिवार की तरह करते और वह भी अपने मालिक की सेवा जी जान से करता। उषा की पढाई में रुचि देखते हुए उन्होंने उसे भी लखनऊ के अच्छे स्कूल में दाखिल करा दिया। वहां अन्य विषयों के साथ अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती थी इससे वह बहुत खुश थी। परन्तु उसको अंग्रेजी का बिलकुल भी ज्ञान नहीं था। उसने पूरी मेहनत से रात दिन एक करके और नंदन, किरण की मदद से अंग्रेजी सीखना शुरू कर दिया। उसकी मेहनत देखकर सभी अचंभित थे। उसने कुछ ही समय में भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। उसने स्कूल में न कभी हीनता का अनुभव किया और न भाषा को अपनी पढाई में बाधा बनने दिया। नंदन और किरण भी उसकी प्रगति से बहुत खुश थे।

उषा ने यह अनुभव कर लिया था कि अंग्रेजी भाषा जानने वाले व बोलने वाले अपने को अन्य लोगों से बेहतर समझते हैं। उसे यह अच्छा नहीं लगता था। उसके मतानुसार अंग्रेजी भी अन्य भाषाओँ की तरह एक भाषा ही है, जिसका ज्ञान होने से किसी अहंकार की आवशयकता नहीं है। धीरे धीरे उषा ने दसवीं की परीक्षा पास कर ली। उसने पूरे स्कूल में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त किये थे। स्कूल ने उसकी आगे की पढ़ाई के लिए उसकी फीस माफ़ कर दी। यद्यपि बुधुआ लड़की को और पढ़ाना नहीं चाहता था परन्तु सबके जोर देने पर वह राजी हो गया। वह हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी बोलने, पढ़ने में बहुत प्रवीण थी। उसको धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलते देखकर लोग हतप्रभ रह जाते। उषा के एक मामा जी भोपाल में रहते थे, अचानक हृदय गति रुक जाने से उनका देहांत हो गया। बुधुआ अपनी पत्नी के साथ वहां जाना चाहता था परन्तु बीमार होने की वजह से वह जाने की स्थिति में नहीं था। अतः वह उषा के साथ भोपाल के लिए चल दिए। ठाकुर साहब ने उन दोनों का आने जाने का रिजर्वेशन ए सी थ्री टियर में करा दिया था। ज़िन्दगी में पहली बार बुधुआ ऐ सी में जा रहा था अतः थोड़ा डरा हुआ था। स्टेशन पर गाड़ी आने पर वह जनरल डिब्बे में चढ़ने लगा तो उषा ने रोक दिया। वह ढूंढते हुए अपने निर्धारित डिब्बे में चढ़ गए। अंदर साफ़ सुथरा माहौल, ठंडा वातावरण और बड़े लोगों को बैठा देखकर दोनों सकुचा गए, परन्तु उषा क्योंकि पढ़ी

लिखी थी और अच्छे स्कूल में पढ़ रही थी वह जल्दी ही संभल गयी। वह दोनों देखते हुए जब अपनी सीटों पर पहुंचे तो वहां पहले से एक परिवार -पति, पत्नी और उनकी दो बड़ी लड़कियां बैठी हुई थीं। बुधुआ और उषा की साधारण वेश भूषा को देखकर उन्होंने मुँह बना लिया। एक ने पूछा -

तुम्हारा टिकट कहाँ का है यह ऐ सी डिब्बा है।'

'हाँ, हमारा टिकट यहीं का है. हमारी बर्थ १५,१६ है, 'उषा ने कहा।

एक लड़की ने अंग्रजी में अपने पिताजी से कहा कि अब कैसे कैसे लोग ए सी में आने लग गए, हमें इनके साथ बैठना पड़ेगा। दूसरी लड़की अंग्रेजी में बोली कि वेशभूषा से तो गवाँर और अनपढ़ लग रहे हैं, पता नहीं कैसे इस डिब्बे में आ गए हैं। यह कहकर वह दूसरी सीट पर जा कर बैठ गयी।

यह सब सुनकर उषा को बड़ा दुःख हुआ। गरीबी ने दोनों को बहुत सहनशील बना दिया था। यह सच भी था कि उनकी हैसियत इसमें चलने की नहीं थी, परन्तु क्या इंसान को बाहरी आडम्बर से परखना ठीक है। बस यही सोचकर उषा ने उनसे अंग्रेजी में कहा -'आपका कहना ठीक है कि हम लोग गरीब हैं और इस डिब्बे में चलने की हमारी हैसियत भी नहीं है।

यह तो हम अपने मालिक की दया से यहाँ हैं, परन्तु क्या ऊपरी वेश भूषा से ही आप इंसान को बड़ा मानती हैं। अंग्रेजी बोलकर क्या आप अपना बड़प्पन दिखाना चाहती हैं। उषा को इस प्रकार धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलते देखकर उनकी जैसे बोलती बंद हो गयी। उन्होंनें अपने व्यव्हार के लिया क्षमा मांगी। आगे का सफर उनके संकोच और उषा के आत्म विश्वास में कट गया। हाँ, इस हादसे से उषा के मन में यह भावना दृढ़ हो गयी कि अंग्रेजी बोलने और जानने वाले औरों को अपने से छोटा समझते हैं। उषा ने १२वी की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में बहुत अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की। स्कूल द्वारा उसको सम्मानित भी किया गया।

गांव में बीमारी की वजह से उषा की माँ की मृत्यु हो गयी। माँ की मृत्यु के पश्चात उषा गुमसुम रहने लगी। वह आगे पढ़ना चाहती थी परन्तु अपने पिताजी को भी अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी। गांव में खाली समय में वह कोठी में आ जाती और घर के काम काज में मदद करती। नंदन और किरण अब विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे। उषा की प्रतिभा देखकर वह उसको आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करते रहते। बुधुआ भी उषा को जब यों चुप बैठे देखता तो दुखी हो जाता। सबके कहने पर उषा ने लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक में दाखिला ले लिया।

उसकी पढ़ाई का खर्च ठाकुर साहब ही उठाते थे। उसके कोई शौक तो थे नहीं इसलिए उसका अधिकांश समय पढ़ाई में ही बीतता। अंततः उसने स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। स्नातक की पढ़ाई के पश्चात उषा गांव में आ गयी। वह अब नौकरी करके गांव में ही शिक्षा के स्तर को सुधारना चाहती थी। सौभाग्य से उन्ही दिनों सरकारी स्कूलों में अध्यापकों की नियुक्ति के लिए विज्ञापन निकला। उसने अर्जी भेज दी। उसने भर्ती परीक्षा भी पास कर ली। उसकी योग्यता को देखते हुए उसकी अध्यापक के रूप में नियुक्ति कर दी गयी। ठाकुर साहब की पहचान के कारण उसको अपने ही गांव में इण्टर कॉलेज में अध्यापक नियुक्त कर दिया गया। सभी इससे बहुत खुश थे। उसको यहाँ अन्य विषयों के अलावा कक्षा ६ के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेदारी दी गयी। उसने पत्राचार द्वारा स्नातकोत्तर की पढ़ाई भी शुरू कर दी थी। स्कूल में वह बच्चों को बहुत लगन और उत्साह से पढ़ाती थी जिससे प्रधानाचार्य बहुत प्रसन्न थे। एक दिन ज़िले के कलेक्टर ने तहसील का दौरा किया। वहां जांच के पश्चात वह अकस्मात वहां के इण्टर कॉलेज में व्यवस्था देखने के लिए आ गए। वहां उषा ने उनका अभिवादन किया। वह कक्षा ६ में आ गए और बच्चों की पढ़ाई और उनके भाषा ज्ञान के बारे में जानकारी ली। उन्होंने वहां बच्चों से कुछ सवाल पूछे जिसका बहुत संतोष जनक उत्तर बच्चों ने दिया। जब उन्होंने बच्चों से अंग्रेजी में प्रश्न किया तो

बच्चों से अंग्रेजी में जबाब सुनकर हतप्रभ रह गये। एक सरकारी स्कूल में जहाँ शिक्षा का माध्यम हिंदी हो, बच्चों के इस अंग्रेजी ज्ञान से वह बहुत प्रभावित हुए। प्रधानाचार्य ने इसका श्रेय उषा को दिया। कलेक्टर साहब ने भी उषा की बहुत प्रशंसा की।

अपने खाली समय में उषा छोटी छोटी कहानियां लिखती रहती। वह साथ ही साथ एक उपन्यास भी अंग्रेजी में लिख रही थी। इसकी चर्चा वह किसी से नहीं करती सिवाय किरण से क्योंकि उसे लगता था कि लोग उसका उपहास न करें। ठाकुर साहब के एक मित्र का लड़का कोलकाता से उनके यहाँ किसी कार्यवश आया हुआ था। उसका प्रकाशन का बहुत बड़ा व्यवसाय था किरण ने उनसे उषा के इस लेखन कार्य के बारे में बताया तो उन्होंने रचनाएँ देखने की इच्छा व्यक्त की। एक दो कहानियां पढ़ने के बाद उन्हें लगा कि यह बहुत उच्चस्तरीय रचनाएँ हैं जिनका प्रकाशन किया जाना चाहिए। उन्होंने उषा से समस्त रचनाएँ और उपन्यास अपने साथ कोलकाता ले जाने का अनुरोध किया। उन्होंने यह भी कहा कि वह इनको प्रकाशित भी करना चाहेंगे। उषा को बिलकुल भी विश्वास नहीं हुआ, उसने खुशी ख़ुशी उनको समस्त रचनाएँ सौंप दी। कोलकाता जाकर उन्होंने उषा जी की कहानियों का संग्रह -'उषा की कहानियां ' नाम से और अंग्रेजी उपन्यास 'माय इंग्लिश माय वर्ल्ड ' के नाम से प्रकाशित कर दिया।

प्रकाशक ने इनका काफी प्रचार किया और देखते देखते दोनों प्रकाशन बहुत चर्चित हो गए । इनकी प्रतियां काफी संख्या में बिकने लगी जिसकी सफलता की सूचना उन्होंने उषा को भी दे दी। लोग भी इस नवोदित लेखिका को जानना और देखना चाहते थे। वह भी इस सफलता से बहुत खुश थी। उसे सब लोगों की बधाई मिल रही थी। प्रकाशकों ने उसके सम्मान में कोलकाता में एक सम्मान समारोह आयोजित किया जिसमे आने के लिए उससे अनुरोध किया गया। नियत तिथि पर वह समारोह स्थल पर अकेले ही पहुँच गयी। आयोजन स्थल पर उन्हें कोई पहचानता नहीं था अतः वह वहां पहुंचकर अन्य आये हुए मेहमानो के बीच जाकर बैठ गयीं। सिर्फ प्रकाशक ही उन्हें पहचानते थे परन्तु किसी आवश्यक कार्यवश उन्हें वहां पहुंचने में विलम्ब हो गया था। उनके न पहुंचने के कारण कार्यक्रम में थोड़ा विलम्ब हो गया था। उषा जी के बगल में बैठी महिला ने बातचीत करने के उद्देस्य से पूछा- ‘क्या आपने उषा जी की कहानी मन मंदिर पढ़ी है? उसमे उन्होंने जो नायक है उसकी पत्नी का बहुत ही भावुक चित्रण किया है।’

'हाँ, नायक सुमंत की अल्पायु में मृत्यु के कारण उसके चित्रण में वेदना ही अधिक थी 'उषा ने कहा’।

'लगता है आपने बहुत गंभीरता से सारी कहानियां पढ़ी हैं' उस महिला ने कहा।

'जब मैंने ही कहानियां लिखी हैं तो न पढ़ने का प्रश्न ही नहीं' उषा ने कहा।

वह महिला भोंचक्की सी उन्हें देखने लगी। ' क्या आप ही उषा जी हैं? '

'हाँ' उषा ने कहा।

हाल में एकदम शोर मचने लगा। उषा जी आ गयीं हैं और हम सब के बीच ही बैठी हैं। लोग अपनी सीटें छोड़ कर वहां जमा हो गए। इसी बीच में प्रकाशक महोदय भी आ गये, उन्होंने जब शोर सुना और भीड़ देखी तो वह भी वहां आ गए। उषा जी को वहां देखकर वह बहुत परेशान हो गए। वह उन्हें भीड़ से निकालकर मंच पर ले गए। उन्होंने मंच पर आकर सार्वजनिक रूप से उषा जी से क्षमा मांगी। उनका आये हुए विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा फूल मालाओं से स्वागत किया गया। उन्हें सरस्वती जी की एक कांस्य प्रतिमा सम्मान स्वरुप दी गयीं। प्रकाशक द्वारा उन्हें ५ लाख रुपये का एक चेक भेंट किया गया। . उनकी रचनाओं की भूरी भूरी प्रशंसा की गयीं। अंत में उनसे प्रार्थना की गयीं कि वह सबको सम्बोधित करें। उषा जी अपने स्वागत से अभिभूत थीं। आज पहली बार ऐसे मंच पर, इतने विशिष्ट व्यक्तियों के बीच उन्हें अपनी बात कहने का मौका मिला था। उन्होंने कहा -'हमारा जन्म एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। हमारी सारी पढ़ाई और जीवन यापन हमारे संरक्षक ठाकुर साहब की उदारता से संभव हुआ। गांव से शिक्षा की शुरुवात हुई जहाँ शिक्षा का माध्यम हिंदी था। अंग्रेजी ना जानने के कारण कई बार अपमानित होना पड़ा। भविष्य में जब अंग्रेजी पढ़ने का अवसर मिला तो यह सोचकर खूब पढ़ा कि कभी भाषा के कारण अपमानित न होना पड़े।

मैं शुरू से ही यह सोचती कि क्यों एक अंग्रेजी भाषा का जानने वाला बड़ा और न जानने वाला छोटा हो सकता है। गांव में मनोरंजन का कोई साधन नहीं था, अतः खाली समय में अपने मन के भावों को कहानी के रूप में कागज पर लिखते चली गई। क्योंकि अंग्रेजी भाषा का भी समुचित ज्ञान हो गया था तो उपन्यास लिखकर यह बताने का प्रयास किया कि कोई भी भाषा एक माध्यम हो सकती व्यक्त करने की, लोगों को जोड़ने की। यह अहंकार और बड़प्पन की प्रतीक नहीं हो सकती है। मेरे इन प्रयासों को आपने सराहा यह मेरा सौभाग्य है। मैं आभारी हूँ श्री रविंद्र जी की जिन्होंने हमारी रचनाओं को प्रकाशित कर आप तक पहुँचाया ।

उषा जी के सन्देश के उपरान्त वहां काफी देर तक तालियों से हाल गूंजता रहा। लोग उनकी सादगी और विचारों की प्रशंसा कर रहे थे। उषा भी आज पहली बार अपने मन के उद्गार व्यक्त कर बहुत हल्का अनुभव कर रहीं थी।

नोट: कहानी के पात्र, स्थान और कथानक सब काल्पनिक हैं।

Mr. Sushil Mehrotra was born & brought up at Kanpur where he did his post graduation in science. He is presently staying in Moradabad after his retirement as an executive from Indian Bank.

Inviting members to participate in proof reading, designing and editing of IKMG Patrika

Basic requirements

Proof Reading:

- Exceptional command over English and/or Hindi language
- Time Discipline, commitment, and ownership towards the given work
- Collaborative attitude and be able to take constructive feedbacks
- Comfortable to make changes digitally

Designing and Editing:

- Creative mindset with great attitude for design aesthetics
- Comfortable working on Keynote (Apple), Canva or similar applications
- Time Discipline, commitment, and ownership towards the given work
- Collaborative attitude and be able to take constructive feedbacks

Pls. come forward and participate in this exciting journey of IKMG Patrika. Express your interest to:

Mr. Manoj Puri for Proof reading @ 9871164399
Mr. Sharad Mehrotra for designing and editing @ 9958363661

अगस्त माह में पड़ने वाले त्योहार

लेखिका - अर्चना मेहरोत्रा, लखनऊ

नाग पंचमी

सावन का महीना सबसे अधिक पवित्र होता है। इस समय सर्प भी बहुत निकलते दिखाई पड़ते हैं। भगवान शिव के गले मे ऩागों की माला पड़ी रहती है। सनातन दर्शन के अनुसार शिव का अर्थ है सदैव सहिष्णु रहते हुए कल्याण करते रहना, भले ही बिष पीना पड़े या विष धारण करना पड़े। सर्प भले ही विषधर हो परन्तु मनुष्य के लिये कल्याणकारी ही होता है। मनुष्य को हानि पहुंचाने वाले कीट पतंगें व चूहों को खाकर हानि से बचाता है। भगवान विष्णु की शैय्या भी शेष नाग की ही है। जैन सम्प्रदाय मे

भगवान पार्श्व नाथ पर भी छत्र छाया नाग राज की ही है। सनातन धर्म हमें यही शिक्षा देता है कि हम सदैव सहिष्णु रहते हुए जीना सीखे। किन्तु आपत्ति काल मे ऩाग जैसे विष का प्रयोग करके आपत्ति कारक शत्रु का समूल विनाश करें। इसलिए हम नाग देवता को दूध व खीर का भोग लगा कर पूजते हैं। क्योंकि वह मनुष्य का परम मित्र और शुभ करता है।

स्वतंत्रता दिवस

१५ अगस्त १९४७ को रात १२ बजे भारत के लिए आजादी की घोषणा की गई जिससे सारा देश आनन्द विभोर हो गया। किन्तु देश आजाद तो नहीं हुआ अपितु सत्ता का हस्तांतरण अंग्रेजों के चमचों को कर दिया गया। आज भी हम गुलामी की चादर ओढ़े हुए हैं। दुनियां के सभी देशों ने उनन्ति अपनी मातृ भाषा में की है। हम अंग्रेजी के गुलाम अपनी वेष भूषा का लबादा भी अंग्रेजीयत में डाले हुए हैं। बच्चों को अपनी मातृभाषा की या स्थानीय भाषा की सीख न देकर अंग्रेजी के शब्दों से ही शुरुआत करवाते हैं। आज दुनिया के कई देश भारतीयता को अपना रहें हैं। ह्वाइट हाउस में भी हिन्दी मे काम काज की मान्यता मिल चुकी है। समय ने पल्टा खाया और हकीकत में अब हमें आजादी का अनुभव होने लगा है।

रक्षा बंधन

भारत में रक्षा बंधन का त्योहार भाई और बहन के बीच के बंधन को मजबूत करने वाला पर्व है। रक्षा बंधन का अर्थ है रक्षा का बंधन, यह पर्व हर साल श्रावण मास पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन बहन अपने भाई की रक्षा के लिए उसकी कलाई पर 'राखी' नामक पवित्र धागा बांधती है। श्रावण मास की पूर्णिमा पर मनाया जाने वाला रक्षा बंधन भारत का सबसे लोकप्रिय त्योहार है। राखी के त्योहार को लेकर कई प्राचीन कहानियां प्रचलित हैं। अगर हम इतिहास देखें तो भाई और बहन के बीच प्यार का प्रतीक रक्षा बंधन युद्ध में जीत का भी प्रतीक है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, प्राचीन काल में देवताओं और राक्षसों के बीच महायुद्ध हुआ, जो लगातार 12 साल तक चला। इस युद्ध के अंत में देवताओं की हार और राक्षसों की जीत हुई। इस जीत के बाद राक्षसों ने देवताओं के राजा इन्द्र के सिंहासन पर कब्जा कर लिया। उनका पाप लगातार बढ़ता गया और उन्होंने तीनों लोकों पर भी कब्जा कर लिया। जब तीनों लोकों में देवताओं की हार हुई तो, सभी देवता मिलकर देवताओं के आध्यात्मिक गुरु बृहस्पति देव के पास गए और उनसे मदद मांगी।

गुरुदेव बृहस्पति ने देवराज इन्द्र को जीत के कुछ मंत्र दिए और उनका जाप करने को कहा, जिससे उनको सुरक्षा मिल सके। बृहस्पति ने इन्द्र को पूजा का पूरा विधान बताया

और कहा की श्रावण मास में पूर्णिमा के दिन से मंत्रों के जाप की प्रक्रिया शुरू करें। बृहस्पति देव ने इन्द्र को एक अभिमंत्रित ताबीज दिया। इस ताबीज को इन्द्र की पत्नी शची 'इंद्राणी' ने उनकी दाहिनी कलाई पर बांध दिया। जिसके बाद इन्द्र देव ने बृहस्पति देव के दिए मंत्रों का विधिपूर्वक जाप शुरू किया।

पूजा-पाठ पूरा करने के बाद इन्द्र को भगवान ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आशीर्वाद मिला। इन आशीर्वादों के कारण, भगवान इन्द्र ने राक्षसों को युद्ध में हरा दिया और तीनों लोकों पर देवताओं का आधिपत्य पुनः स्थापित किया। इस जीत के बाद हर वर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा को रक्षा बंधन का त्योहार मनाया जाने लगा। वर्तमान में, रक्षा बंधन का त्योहार भाई-बहन के प्रेम के साथ साथ बाजारवाद का भी पर्याय बन गया है। भाई बहन के मन के प्यार पर अब बाजारवाद हावी है, हर तरफ रक्षा बंधन केवल दिखावा होता जा रहा है। इस सम्बन्ध को समझना होगा और रक्षा बंधन के पवित्र त्योहार को उसका मूल स्वरुप देना होगा।

Ms. Archana Mehrotra resides in Lucknow and enjoys doing yoga, exploring new places, gardening, listening to music and watching movies.

Personality of the month

www.facebook.com/profile.php?id=100007128370643

twitter.com/ShreyaK99267951

https://youtube.com/channel/UCMbJodBwJGretaU2wIEpmFw

https://www.Instagram.com/invites/contact/?i=1s2h2eb2yge5a&utm_content=3g62em1

Excellence awards:

- Bravo Book of World Record For "Excellence in Live Singing Performance" 2019.
- Innovative Achiever Award 2019 by Vrishka Book of World Record for Excellence in Live Singing Performance

TV reality shows:

- Indian Talent Fight Season-2 (MTV)
- Next Singing Superstar (9XM)
- Dhamaal India Dance Season-6 Achieve 1st
- Runner UP Price in TV Reality Show -2019
- Perform on Promotion Show Of Colours TV
- Channel Show "India's Got Talent"
- Perform On Promotion Show Of Colours TV
- Channel Show "Rising Star"

Special awards:

- National Iconic Personality Award 2019-20 By Purwar Achiever Foundation At New Delhi.
- Maharani Laxmi Bai Nari Shakti Samman-2020
- “Pride Of Nation Award" By Curiousity Crown at New Delhi
- “Sai Sitare Award" at New Delhi
- “Prabhat Prestigious Award"
- “Lucknow Ratan Award" By Kalma Film's & Broadcaster
- “Laadli Singer Award" By A to Z Brand Communication
- “Pride Of Kanpur Award"
- Dhruv Star Award 2019-20 in Season-4
- U.P Achievement Award 2019-20
- Super Daughter Award 2019-20
- Awadh Gaurav Award 2019-20
- Award For Excellence-2019 As a Solo Singer By "Pragati Sarv Kalyan Samiti"

Singing Achievement

- First Solo Singing Performance in "Zee Mount Litterea School"
- First Runner-up Award at "Shaan of UP-2018"
- First Runner-up Award at Sangam kala Group in Non Filmy Category
- Second Runner-UP in Utimate Talent Show Down
- First Runner-UP in Talent Hunt Show
- First Runner-UP in Rising Star Show
- Second Runner-UP in Bride Star Hunt Season-3
- First Runner-UP in Top Model of UP & UK - 2018
- Second Runner-up in Shaan Of Lucknow
- Achieve Father's India Award 2019 at Lucknow
- Performed On Independance Day Celebration By J.P.S Welfare Foundation
- Performed On Organized Perform by P.B News 24
- Performed On World Pollution Day
- Performed On Finale at Gaurvanjali Sammiti
- Performed On Finale at Shubhanjali Kala Ratnam
- Performed On New Year Dj Night By S.B.E Group
- Performed On Mother's Day Program - 2019
- Performed On Unplugged Art & Music Festival Award 2019
- Performed On Talent Star Award 2019.
- Performed On Musical Programme By Rajat Shri Foundation.

संगीत का महत्व

लेखिका - श्रीमती ऋतु अग्रवाल, मेरठ

भारतीय सभ्यता और संगीत के उद्भव, उत्थान और विकास में संगीत का अप्रतिम योगदान है। संगीत एक ललित कला है जो गायन, वादन और नृत्य के सम्मिश्रण का अद्भुत संगम है। संगीत आत्मा एवं ह्रदय को आनंद से सराबोर कर देने वाला अनुपम माध्यम है जो व्यक्ति को आंतरिक अलौकिकता के दर्शन कराता है।

संगीत का उद्भव 'ॐ' नाद से हुआ है। 'ॐ' नृत्य एवं संगीत के प्रणेता भगवान शिव का आगम स्त्रोत है। विभिन्न नादों में से कर्णप्रिय श्रुतियों के मंथन से उत्पन्न सुमधुर 12 स्वरों के मेल से समूचा संगीत उत्पन्न हुआ है। संगीत अपने दो स्वरूपों में दिव्यता का अनुभव कराता है। संगीत के दो रूपों का उल्लेख भारतीय संगीत महाकाव्यों में देखने और पढ़ने को मिलता है।

(1) मार्गी संगीत (2) देशी संगीत

मार्गी संगीत के विषय में कोई भी विस्तृत विवेचन नहीं मिलता तथापि प्राचीन

पांडुलिपियों में मार्गी संगीत को मोक्ष प्रदान करने वाला संगीत बताया गया है किन्तु देशी संगीत अपने विभिन्न स्वरूपों में आज भी जीवित है। ध्रुपद, धमार, ख्याल,तराना, सरगम गीत, लक्षण गीत, चित्रपट संगीत, लोकगीत, त्रिवट, चतुरंग आदि अनेकानेक प्रकार आज भी संगीत की विरासत को समृद्ध करते हैं।

शास्त्र की दृष्टि से देखा जाए तो ध्रुपद गायन संगीत की सबसे प्राचीन विधा है। यह बहुत ही गंभीरता एवं शुद्धता के साथ गाया जाता है। ध्रुपद गाने के लिए कलाकार को अनवरत साधना में लगे रहना पड़ता है। माना जाता है कि ध्रुपद का आविष्कार 15वीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने किया था किंतु उसके बारे में कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। स्वामी हरिदास, बैजूबावरा,सूरदास,रामदास,तानसेन आदि बहुत ही कुशल ध्रुपद गायक थे।

संगीत की सभी विधाओं में सुर,लय,ताल और स्वर का अत्यंत महत्व है। संगीत के बारह स्वरों को जब विविध स्वरूपों में गाया जाता है तो मधुर गीतों की उत्पत्ति होती है। हर विधा की तरह संगीत के भी कुछ नियम होते हैं जिनका अनुपालन करना संगीत की आराधना करने के समान है।

संक्षेप में कहा जाए तो संगीत स्वयं ईश्वर का प्रतिरूप है। फिर चाहे वह भगवान शिव का डमरू हो, माँ सरस्वती की वीणा हो, श्रीकृष्ण की बाँसुरी हो या महर्षि नारद की वीणा। संगीत ना केवल मनोरंजन अपितु आत्मिक और मानसिक शांति का भी पर्यायवाची है। अनेक कवियों ने अपनी रचनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए संगीत को ही माध्यम चुना है।

नृत्यं वाद्यानुगं प्रोक्तं गीतानुवृत्तिं च।

अतो गीतं प्रधानत्वाद्त्राSSदावभिधीयते।।

Mrs. Ritu Aggarwal resides in Meerut. She is a well trained culinary artist and is learning classical music.

प्रभात

लेखिका - श्रीमती बीना मेहरोत्रा, शाहजहाँपुर

एक नया सवेरा आया है
मन के दुखो को दूर करने
एक नई उम्मीद जगाने को
रोज सुबह एक नई ताजगी
आए अपना अधूरा वचन निभाने को
सूरज की किरणें भी छूट गई
फूल पत्ते भी खिल उठे है
ओस की बूंदे दिखाएं हुए
भोर-भए पक्षी जाग जाएं
अपने पर फैलाए खड़े हैं
अन्न का दाना ढूंढ़ने को
सब प्रभात फेरी को जाते

हरी-भरी घास पर चलते

शीतल हवा में घूम आते

उगता है सूरज एक नई आस लेकर धरती को रोशन करता

है विश्वास देके

अब गमो का सागर न होगा

सबका जीवन उल्लास से भरा होगा

Mrs. Beena Mehrotra resides in Shahjahanpur and enjoys writing poems and experiment to make new dishes.

चरण स्पर्श का महत्व

लेखिका - श्रीमती रजनी सेठ, शाहजहाँपुर

हमारी सनातन संस्कृति में अभिवादन करने के तरीके विनम्रता और समर्पण भाव प्रकट करते हैं। शास्त्रों के अनुसार देवता, गुरु, माता- पिता बुजुर्गों एवं बड़ों के चरण वंदन को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

शास्त्रों के अनुसार भगवान श्री राम नित्य प्रति सुबह सबसे पहले माता-पिता के चरणों में सर झुका कर आशीर्वाद प्राप्त करते थे। देवताओं में प्रथम पूज्य गणेश जी भी अपने माता-पिता के आशीर्वाद से ही बने।

जब कोई हमसे कम उम्र का व्यक्ति पैर छूता है तो ईश्वर का नाम लेकर मन से आशीर्वाद निकलता है जिससे उस व्यक्ति की समस्याएं खत्म होती हैं और यश कीर्ति बढ़ती है। नकारात्मक शक्तियों से उसकी रक्षा होती है।

चरण स्पर्श का वैज्ञानिक मत भी है। जब हम किसी के पैर छूते हैं तो हम अपने हाथों को उसके पैरों पर रखते हैं और वह व्यक्ति अपना आशीष पूर्ण हाथ हमारे सर पर रखता है तो इस तरह विधुत चुंबकीय ऊर्जा चक्र बन जाता है और वह उर्जा हमारे शरीर में प्रवाहित होती है। वैज्ञानिक न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत भी यही दर्शाता है ।

यह चुंबकीय उर्जा उतरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रवाहित होकर अपना चक्र पूरा करती है। शरीर के दक्षिणी ध्रुव का मतलब पैरों में यह उर्जा बहुत अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती है। पैरों से हाथो द्वारा इस ऊर्जा को ग्रहण करने की प्रक्रिया ही चरण स्पर्श कहलाती है।

चरण स्पर्श करने से बड़ों का आशीर्वाद सुरक्षा कवच का कार्य करता है और हमें अपने लक्ष्य को पाने का बल मिलता है। घुटनों के बल बैठकर साक्षात दंडवत करने से शरीर लचीला होता है । परंतु इसके विपरीत आज के शिक्षित व सभ्य समाज में प्रायः यह प्रथा लुप्त होती जा रही है। इसका स्थान हेलो, हाय, गुड मॉर्निंग के द्वारा बड़ों का सम्मान करने में प्रयोग किया जाता है। इसमें लोग अपनी वाह वाही समझते हैं। परंतु कुछ प्रांतों में यह प्रथा बहुत ही संस्कारी रूप में होती है। जिसमें राजस्थानी एवं राजपूती लोगों का चरण स्पर्श का तरीका सीखने योग्य होता है।

मेरे अनुसार बड़ों के पैर छूने से हमें हानि कम लाभ अधिक है। अतः हमें नई पीढ़ी को इस संस्कार के प्रति शिक्षित करना चाहिए।

Mrs. Rajni Seth has a keen interest in reading, writing poetry/articles in Hindi language. She also has great interest in singing old songs, gazals and bhajans.

कसक

लेखक - श्री पार्थ खन्ना, मुरादाबाद

तेरी ज़ुल्फ़ें रात से घनी थीं,
तेरी आँखें चाँद से बड़ी थीं,
तूं उस वक्त मेरे सामने,
घुंघराले बाल लेकर खड़ी थी।
मैं भी था बेसबर,
मोहब्बत थी बेशर्त,
तेरी मेरी नज़रों का मिलना,
वो भी क्या घड़ी थी।
बस एक कसक,
जो खाएं सी जा रही थी,
मोहब्बत भी उससे,
जो मुझसे 8 साल बड़ी थी।

Parth is a 21 year aspiring storyteller who wishes to change the perspective of human civilisation by pouring the ancient wisdom into the brackets of modern day storytelling.

निर्गुण

लेखिका - श्रीमती शबनम मेहरोत्रा, कानपुर

उमरिया निस दिन ढ़लती जाए,

उमरिया निस दिन ढ़लती जाए,

उम्र की पूंजी ज्यों ज्यों घाटे,

ये काया सिमटती जाए ,

उमरिया निस ....

उम्र की पूंजी बचते बचते कर लो सदुपयोग,

वरना अग्नि भस्म करेगी आएगा वह भी योग,

हरेक दिवस पर काल के जबड़े, काया सरकती जाए,

उम्र की पूँजी .....

धन दौलत सब रह जाएगी धरी रहेगी अटारी,
कल जब आएगा ले जाने करके भैंसा सवारी,
इस काया का छाया तक न संग लिपटती जाए,
उम्र की पूंजी.......

सदकर्मो से लोगों का दिल जीत सको तो जीत,
नाम रहेगा पीछे तेरे लोगों को बाँटो प्रीत,
शबनम ऐसा कर वर्षों ,
कुछ नैन बरसते जाए ,
उम्र की पूंजी ......

उमरिया निस दिन ढ़लती जाए ,
उमरिया निस दिन ढ़लती जाए,

श्रीमती शबनम मेहरोत्रा का जन्म १९४९ में जबलपुर नगर में सम्भ्रांत कुलीन व्यापारिक परिवार में हुआ।
प्रकाशित कृतियाँ- प्रेम पथ (काव्य संग्रह)
साझा संग्रह - स्वर्णाभ (काव्य)
साझा संग्रह - दौर ए हयात (लघुकथा)
भावंजली कविता संग्रह व सुमन सुगंध साझा लघुकथा संग्रह

स्वानुशासन

लेखिका - श्रीमती नीता कपूर, कानपुर

आजादी मिले बहुत वर्ष हुए

हम बहुत पहले आजाद हुए।

आजादी की वर्षगांठ मनाना है

तिरंगे को लहराना है।

जीवन में कुछ नियम अपनाना है

दूसरों से पहले स्वयं को जगाना है।

स्वयं पर करना है शासन

जीवन में लाना है अनुशासन।

अनुशासन है जीवन का अंग

इसको मत करना भंग।

हर पल इसको रखना साथ

तभी बनेगी सबकी बात।

कुछ ऐसा कर चलो
कि दुनिया करे तुमको याद।
सद्मार्ग पर चलकर दूसरों को दिखाना है
किसी एक को नहीं! चलाना ज़माना है।
स्वतः कुछ कर दूसरों को दो संदेश
परोपकार करके मन में मत लाना क्लेश।
जो बोवोगे वही काटोगे
ऊपर वाले से आखिर कहां भागोगे।
जब सब खुश होंगे तो देश में रहेगी खुशहाली
खिलेगी जहां की हर कली हर डाली।

Mrs. Nita Kapoor has been a teacher for 30 years, is a proficient tabla player and enjoys music, singing and poetry.

आशा

लेखिका - श्रीमती रंजना कपूर, दिल्ली

कुछ पाने की तमन्ना में,
बहुत कुछ खोती चली गई,
पीछे मुड़कर देखा तो,
सब को छोड़ती चली गई,
जाना भी चाहा पीछे तो आगे बहुत आ गई हूं मैं ,
अब मैंने माना ये चलते ही जाना है आगे ही आगे ,
अंधेरा पीछे की राहों मे भी था और आगे की राहों मे भी है तो क्यों न कुछ कर दिखाओ ,
अंधेरी राहों मे दीप जलाएं,
कुछ पाने की तमन्ना में बहुत कुछ खोती चली थी मैं,
पर जब दीप जलाए आशा के तो सब कुछ पाती चली गई मैं।

Ranjana Kapoor is a 52 years old homemaker, a rheumatoid arthritis patient and mother to two kids. She has a keen interest in planting. She has done Fashion Designing from YWCA and have been doing poetry since her teenage.

IKMG Matrimonial Group

जो खत्री परिवार अपने बच्चों के लिए उपयुक्त सजातीय रिश्ता तलाश कर रहे हैं उनसे आग्रह है कि IKMG MATRIMONIAL GROUP से जुड़ें। हमारे ग्रुप में उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मुंबई, नोएडा, राजस्थान, पंजाब, मध्यप्रदेश, कोलकाता, हैदराबाद, अहमदाबाद, बैंगलोर आदि शहरों के सदस्य जुड़े हुए हैं।

इसी के साथ कुछ खत्री परिवारों के लड़के विदेश में कार्यरत हैं, जैसे अमेरिका, लंदन, जर्मनी आदि, जो परिवार विदेश में कार्यरत लड़कों से रिश्ते के इच्छुक हों वे भी सम्पर्क कर सकते हैं।

जिन लड़के/लड़कियों की शिक्षा कम है व उम्र अधिक हो गई है किन्तु विवाह नहीं हो सका वे भी आमंत्रित हैं।

तलाकशुदा/विधवा भी पुनर्विवाह के लिए ग्रुप से जुड़ सकते हैं।

ग्रुप से जुड़ने के लिए अपना नाम व शहर का नाम intkmg@gmail.com पर ईमेल सकते हैं।

RAJ KHANNA, CHAIRMAN

IKMG LTD
Connecting people
who care..

IKMG LTD
Connecting people
who care..
Matrimonial group

राजश्री पुरुषोत्तम दास टंडन

लेखक - श्री पवन मेहरोत्रा, आगरा

आधुनिक भारत के प्रमुख स्वाधीनता सेनानियों में से एक थे। वे 'राजर्षि' के नाम से भी विख्यात थे। उन्होंने अपना जीवन एक वकील के रूप में प्रारम्भ किया था। हिन्दी को आगे बढ़ाने और इसे राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के लिए पुरुषोत्तम दास जी ने काफ़ी प्रयास किये थे। वे हिन्दी को देश की आज़ादी के पहले आज़ादी प्राप्त करने का साधन मानते रहे और आज़ादी मिल जाने के बाद आज़ादी को बनाये रखने का। वर्ष 1950 में वे 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष नियुक्त हुए थे। पुरुषोत्तम दास टंडन को भारत के राजनीतिक और सामाजिक जीवन में नयी चेतना, नयी लहर, नयी क्रान्ति पैदा करने वाला कर्मयोगी कहा गया है। वर्ष 1961 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया था।

जन्म तथा शिक्षा

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त, 1882 को उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम और धार्मिक शहर इलाहाबाद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय 'सिटी एंग्लो

वर्नाक्यूलर विद्यालय' में हुई थी। इसके बाद उन्होंने एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की और एम.ए. इतिहास विषय से किया। वर्ष 1906 में वकालत की प्रैक्टिस के लिए पुरुषोत्तम जी ने 'इलाहाबाद उच्च न्यायालय' में काम करना शुरू किया।

विद्यार्थीजीवन

पुरुषोत्तम जी के व्यक्तित्व का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका विधायी जीवन था, जिसमें वह आज़ादी के पूर्व एक दशक से भी अधिक समय तक उत्तर प्रदेश की विधानसभा के अध्यक्ष रहे। वे विधान सभा, लोक सभा और राज्य सभा के भी सदस्य रहे थे। वे समर्पित राजनयिक, हिन्दी के अनन्य सेवक, कर्मठ पत्रकार, तेजस्वी वक्ता और समाज सुधारक थे।

क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत

पुरुषोत्तम दास टंडन ने 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के साथ वर्ष 1899 से ही काम करना शुरु कर दिया था। क्रांतिकारी कार्यकलापों के कारण उन्हें 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' के 'म्योर सेन्ट्रल कॉलेज' से निष्कासित कर दिया गया था। बाद में 1903 में अपने पिता के निधन के बाद उन्होंने एक अन्य कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी की। वर्ष 1919 में देश

को झकझोर कर रख देने वाली घटना 'जलियाँवाला बाग़ हत्याकांड' का अध्ययन करने वाली कांग्रेस पार्टी की समिति के वह एक सदस्य बनाये गए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के कहने पर पुरुषोत्तम जी ने वकालत को छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। उन्होंने 'रॉलेट एक्ट' विरोधी सत्याग्रह में सक्रियता से भाग लिया।

जेल यात्रा व आन्दोलन

वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी द्वारा चलाये जा रहे 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' के सिलसिले में वे बस्ती में गिरफ्तार हुए और उन्हें कारावास का दण्ड मिला। बाद के समय में उन्होंने इलाहाबाद में 'कृषक आन्दोलन' का संचालन किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश में 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' का संचालन किया। किसानों में लगान की न अदायगी का आन्दोलन भी चलाया। वे संयुक्त प्रांत व्यवस्थापिका परिषद् के सदस्य बने तथा 1937 ई. में इसके अध्यक्ष भी नियुक्त हुए। पुरुषोत्तम दास टंडन ने भारत के विभाजन का डटकर विरोध किया। 1931 में लंदन में आयोजित 'गोलमेज सम्मेलन' से गाँधीजी के वापस लौटने से पहले जिन स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार किया गया था, उनमें जवाहर लाल नेहरू के साथ पुरुषोत्तम दास टंडन भी थे। उन्होंने बिहार में कृषि को बढ़ावा देने के लिए काफ़ी कार्य किए थे। वर्ष 1933 में वे बिहार की 'प्रादेशिक किसान सभा' के

अध्यक्ष चुने गए थे। 'बिहार किसान आंदोलन' के साथ सहानुभूति रखते हुए उन्होंने विकास के अनेक कार्य सम्पन्न कराये।

कांग्रेस से त्यागपत्र

वर्ष 1951 ई. में पुरुषोत्तम दास टंडन कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये थे, किंतु इस पद पर वे अधिक समय तक नहीं रहे। क्योंकि बाद के समय में भाषायी राज्यों के सम्बन्ध में कांग्रेस से उनका मतभेद हो गया। मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया।

हिन्दी के पक्षधर

पुरुषोत्तम जी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के प्रबल समर्थक थे और इसको आगे बढ़ाने और राष्ट्रभाषा का स्थान देने के लिए काफ़ी प्रयास कर रहे थे। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने 10 अक्टूबर, 1910 को 'नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी के प्रांगण में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की। इसी क्रम में 1918 में उन्होंने 'हिन्दी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिन्दी रक्षक दल' की स्थापना की। वे हिन्दी को देश की आज़ादी के पहले 'आज़ादी प्राप्त करने का' और आज़ादी के बाद 'आज़ादी को बनाये रखने का' एक

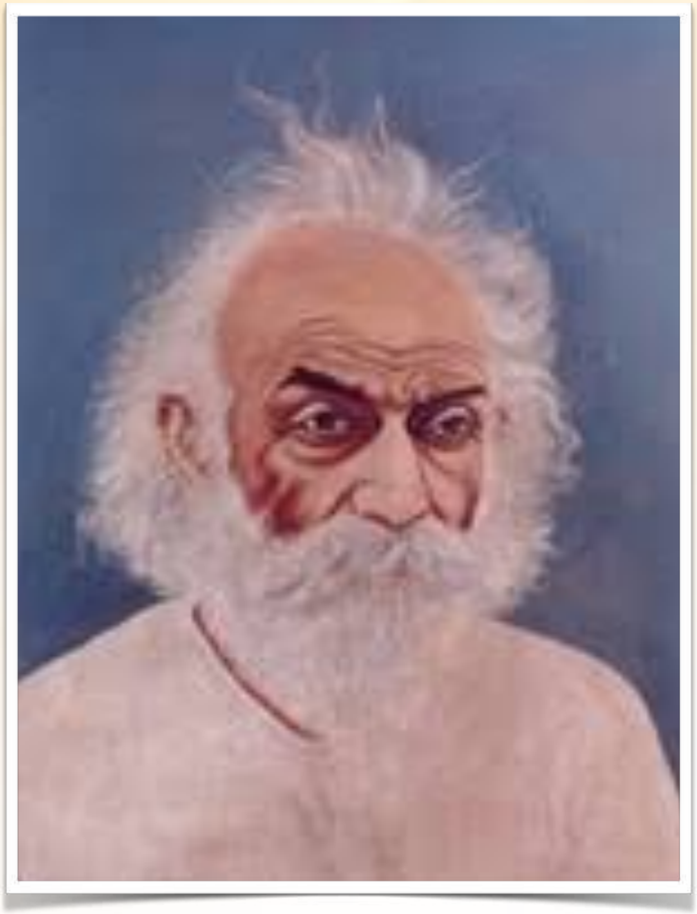

बड़ा साधन मानते थे।' पुरुषोत्तमदास टंडन हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। वह हिन्दी में भारत की मिट्टी की सुगंध महसूस करते थे। 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के 'इंदौर अधिवेशन' में स्पष्ट घोषणा की गई थी कि- "अब से राजकीय सभाओं, कांग्रेस की प्रांतीय सभाओं और अन्य सम्मेलनों में अंग्रेज़ी का एक शब्द भी सुनाई न पड़े।

राजनीतिक सफलताएँ

भारत की आज़ादी के बाद 1951 में हुए देश के पहले चुनाव में पाँच प्रत्याशी निर्विरोध चुने गए थे। इसके बाद 1952 में हुए उप-चुनाव में इलाहाबाद पश्चिम में कांग्रेस के पुरुषोत्तम दास टंडन निर्विरोध विजयी हुए। वर्ष 1962 में टिहरी गढ़वाल से वहाँ के राजा मानवेंद्रशाह ने जब चुनाव लड़ने का फैसला किया तो पुरुषोत्तम दास टंडन के मुकाबले कोई प्रत्याशी आगे नहीं आया। इस चुनाव में 'जनसंघ' के रंगीलाल ने परचा भरा था, लेकिन बाद में उन्होंने भी पर्चा वापस ले लिया।

कार्यकाल

आज़ादी के बाद पुरुषोत्तम दास टंडन ने उत्तर प्रदेश की विधान सभा के प्रवक्ता के रूप में तेरह साल तक काम किया। 31 जुलाई, 1937 से लेकर 10 अगस्त, 1950 तक के लंबे कार्यकाल के दौरान उन्होंने विधान सभा को कई बार संबोधित किया।

पुरस्कार

वर्ष 1961 में हिन्दी भाषा को देश में अग्रणी स्थान दिलाने में अहम भूमिका निभाने के लिए उन्हें देश का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार दिया गया। 23 अप्रैल, 1961 को उन्हें भारत सरकार द्वारा 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

निधन

राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पित पुरुषोत्तम दास टंडन जी का निधन 1 जुलाई, 1962 को हुआ।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का कथन

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का हिन्दी के साथ-साथ गोहत्या बन्द न किए जाने, शराब

को राजस्व का साधन बनाए रखने तथा "धर्मनिरपेक्षता" की आड़ में पाठ पुस्तकों में से धार्मिक-नैतिक प्रेरणा देने वाली सामग्री हटाये जाने जैसे विषयों पर कांग्रेस से निरन्तर विरोध रहा। पौराणिक साहित्यकार के मर्मज्ञ, महान् गोभक्त संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज का टंडन जी से निकट का आत्मीय सम्बंध था। टंडन जी के गोलोकवासी होने के बाद प्रभुदत्त जी ने "कल्याण" पत्रिका में पुरुषोत्तम दास टंडन के संस्मरण में लिखा था कि- "वे मुझे अपनी सब बातें हृदय खोलकर बताते थे। कहते थे कि एक बार चित्रकूट के कुछ लोग मालवीय जी के पास आये और कहने लगे- "महाराज! हमारे यहाँ गाय का वध होता है।" मालवीय जी ने मुझे वहाँ भेजा। मैंने वहाँ जाकर पूछा- "गऊ को क्यों मारते हो?" उन दिनों गोमांस को मुस्लिम भी नहीं खाते थे। चमड़े के लिए गोवध करते थे। मांस को तो वे फेंक भी देते थे। उसी दिन मैंने चमड़े के जूते न पहनने की प्रतिज्ञा की।

श्री पवन मेहरोत्रा आगरा के निवासी हैं और एक कुशल वास्तु व अंकशास्त्र विशेषज्ञ हैं I

KITCHEN Tales

मूंग की दाल के रसाजे

श्रीमती पूनम टंडन द्वारा बनाने की विधि

सामग्री

दो कटोरी मूंग की दाल

अदरक का एक टुकड़ा

चार पांच हरी मिर्च

एक चम्मच लाल मिर्च पाउडर

चाट मसाला

दो चम्मच धनिया पाउडर

नमक स्वादानुसार

तलने के लिए तेल

दो कटोरी दही

बनाने की विधि

मूंग दाल को दो घंटे पानी में भिगोकर रखें। मिक्सी में अदरक हरी मिर्च डालकर अच्छी तरह पीस लें ज्यादा पतली न करें।

गैस पर कढ़ाई चढ़ाकर दो चम्मच तेल डालकर गरम होने पर पिसी दाल डालें उसमें नमक, मिर्च पाउडर, थोड़ा चाट मसाला व पिसी धनिया पाउडर मिलाकर कढ़ाई में डालकर चलाएं गाढा होने तक चलाए व एक थाली में तेल लगाकर दाल को फैला देंगे जैसे बरफी जमाई जाती है। ठंडी होने पर चाकू से बर्फी के आकार का काट लें फिर कढ़ाई में तेल गरम करें और कटे हुए टुकड़ों को गुलाबी जैसा तल लें व प्लेट में निकाल लें। ऊपर से कटी धनिया डालें हरी चटनी व टोमेटो सास के साथ परोसें।

इसी को दूसरे प्रकार से भी बनाया जाता है। दही को फेंट लें और इन टुकड़ों को दही में डालकर ऊपर से नमक, पिसा जीरा पाउडर व धनियां पत्ती डालकर दही बड़े का भी आनंद ले सकते हैं एक चीज दो स्वाद।

Mrs. Poonam Tandon resides in Shahjahanpur and enjoys writing poems in her leisure time.

संतरे की लाजवाब खीर

श्रीमती बीना मेहरोत्रा द्वारा बनाने की विधि

आ गए आपके शहर में नागपुर के महाराजा संतरा जी अपनी पत्नी नारंगी देवी के साथ।

सामग्री

- 4 संतरे पीले वाले
- मिल्क मेड का डब्बा
- चीनी, इलायची छोटी 4
- पिस्ता व बादाम महीन महीन कटा हुआ
- एक लीटर दूध
- वर्क ऊपर से सजाने के लिए

बनाने की विधि

1- सबसे पहले संतरे को छील लें, फिर उसकी फांकों को छीलकर उसका गूदा निकाल लें।

2- अब एक कढ़ाई मे दूध उबलने रख दीजिए।

3-जब दूध थोड़ा गाढ़ा हो जाए तो उसमें मिल्क मेड मिला दें और लगातार चलाते रहिए।

4- अब उसे गैस से उतार कर ठंडा होने दें और एक घंटे के लिए फ्रिज में रख दें।

5- फ्रिज से निकाल कर थोड़ी कटी मेवा मिला दें व उसको कलछी से चला दें।

6- अब उसमें संतरे की फांकों को छोटे टुकड़ों में काट कर डाल दें।

अब ऊपर से कटे महीन मेवे से सजा कर वर्क लगा दें।

अब आपकी संतरे की लाजवाब खीर रानी तैयार है।

ठंडी ठंडी खीर अपने प्यारे मेहमानों को सर्व करें।

Mrs. Beena Mehrotra resides in Shahjahanpur and enjoys writing poems and experiment to make new dishes.

OUR
PROUDEST
MOMENTS

Father's day celebration by Agra unit

IKMG AGRA UNIT

A UNIT OF
INTERNATIONAL KHATTRI MAHASABHA GROUP LTD.,
LONDON (REGD.)
www.ikmgglobal.org

Father's Day Celebration

Father is A son's first hero, A daughter's first love

19th June 2022

We are honoured to felicitate

Mr R.N Tandon

On father's day.
we pray for your good health and happiness.
The power of a dad in a child's Life is unmatched.

Mrs. Chhavi Mehrotra	Dr. Shonu Mehrotraa	Mr. Raj Khanna	Mr. Pawan Mehrotra
President	Director	Founder Chairman	Vice President

The Art Corner

Artwork

Artist: Mrs. Rachna Arora, Delhi

Rachna Arora is a homemaker and resides in Delhi. She enjoys cooking and art work in her leisure time.

She

Artist: Ms. Ambika Arora, Sitapur

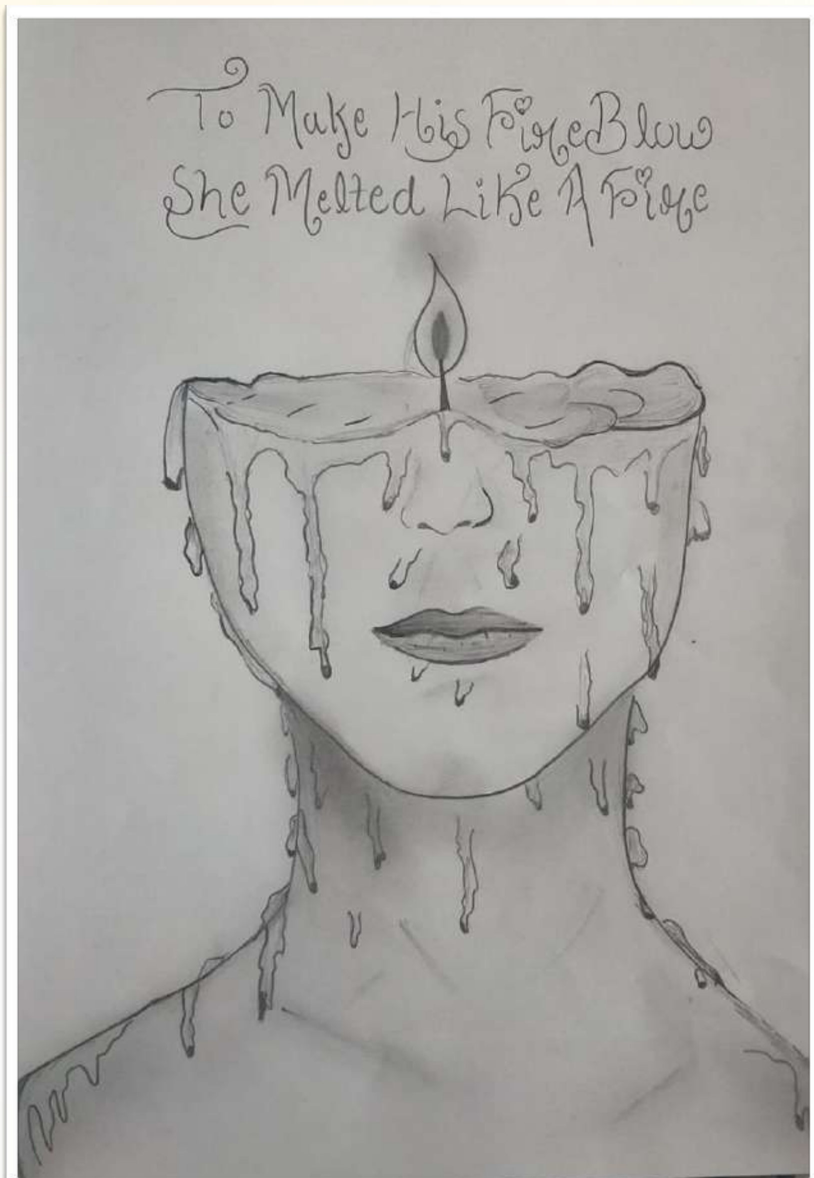

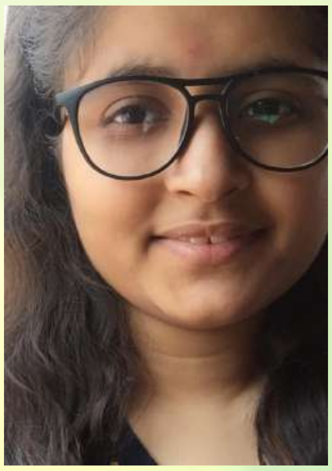

Ambika Arora is a student of Class 12th and enjoys drawing and painting in her leisure time.

Butterfly

Artist: Ms. Akshita Tandon, Shahjahanpur

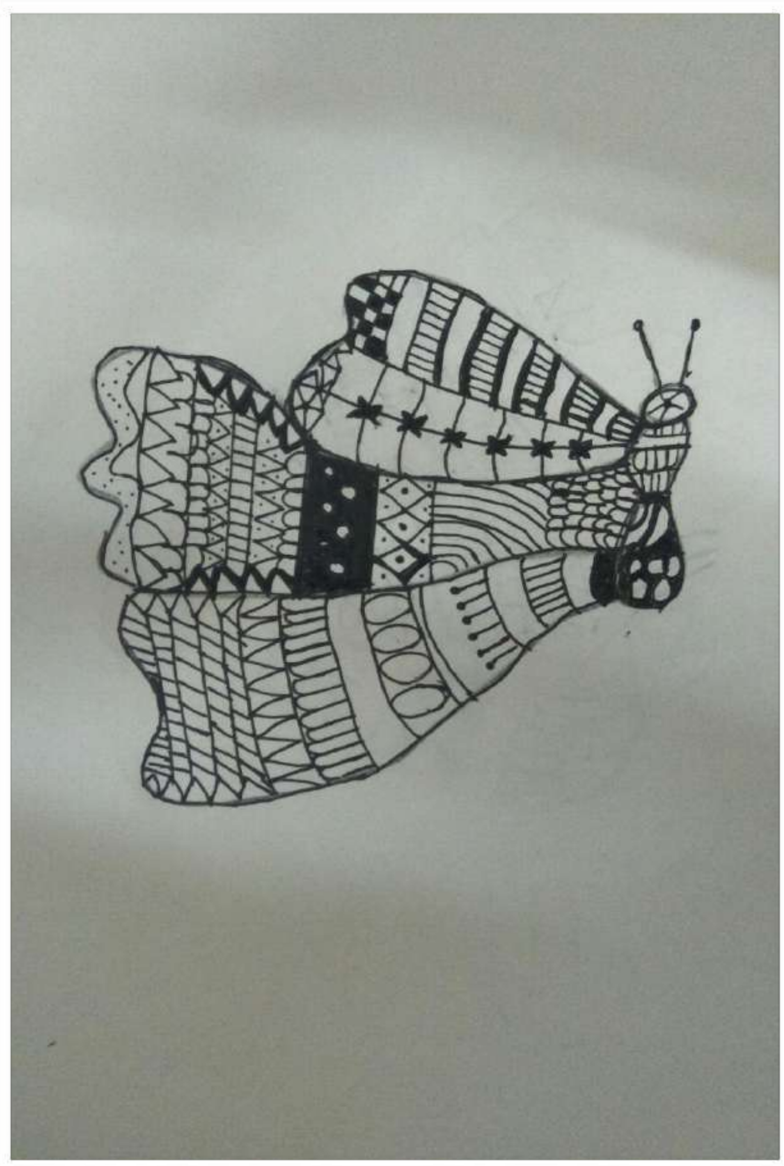

Ambika Arora is a student of Class 7 and enjoys reading novels, dancing and drawing.

Together we can

Artist: Ms. Pranvi Seth, Shahjahanpur

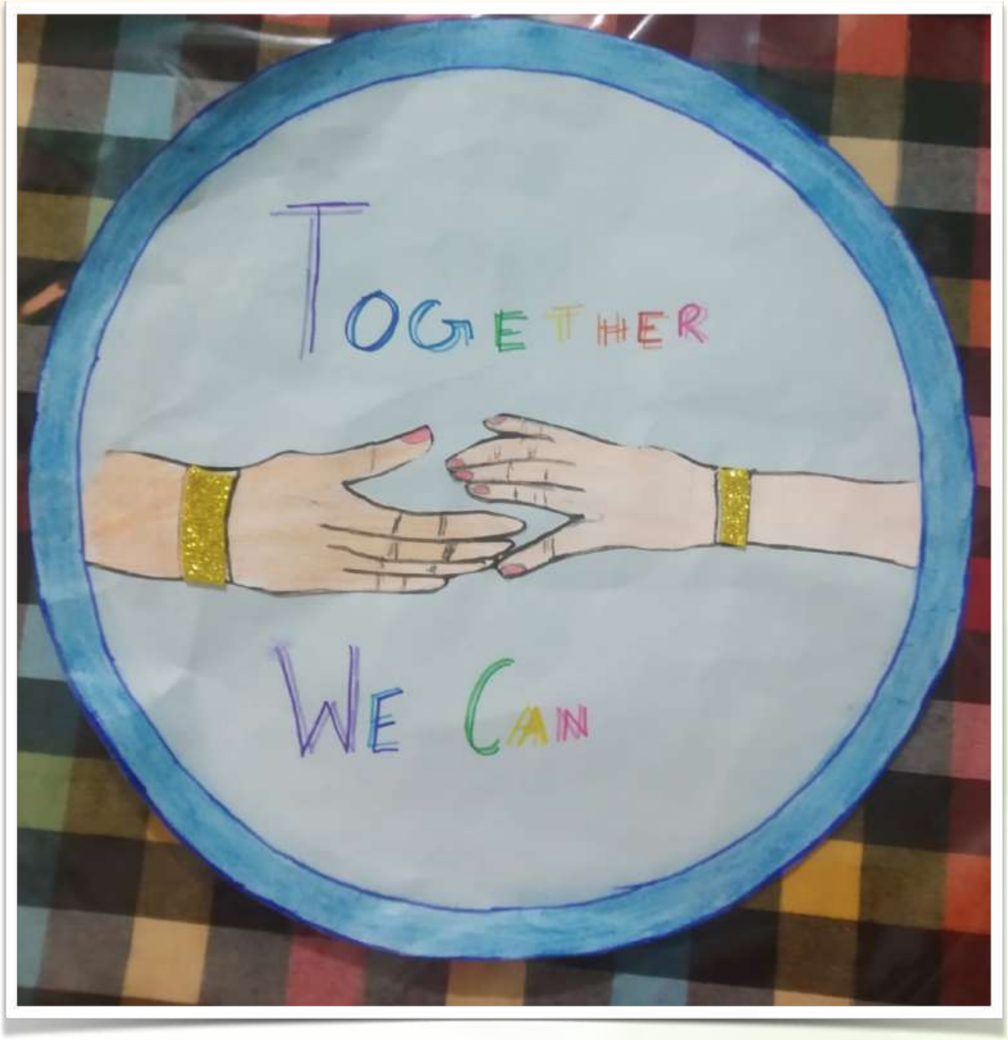

Pranvi Seth lives in Shahjahanpur UP . She is 10 years old and studies in class 5. She enjoys to spend her free time in sketching , dancing and singing.

Radha-Krishna Leela

Artist: Mrs. Ranju Gupta, Meerut

रंजू गुप्ता गणित की शिक्षिका हैं और पिछले कुछ वर्षो से भारत सोका गक्कई संगठन से जुडी हुई हैं। इस संगठन से जुड़ने के बाद आपके जीवन को एक नई दिशा मिली और वहीं से प्रेरणा पाकर ही आपने लेखन और आर्ट कार्य प्रारम्भ किया।

Love
my
Style

Happy Birthday
Archana Mehrotra
Lucknow

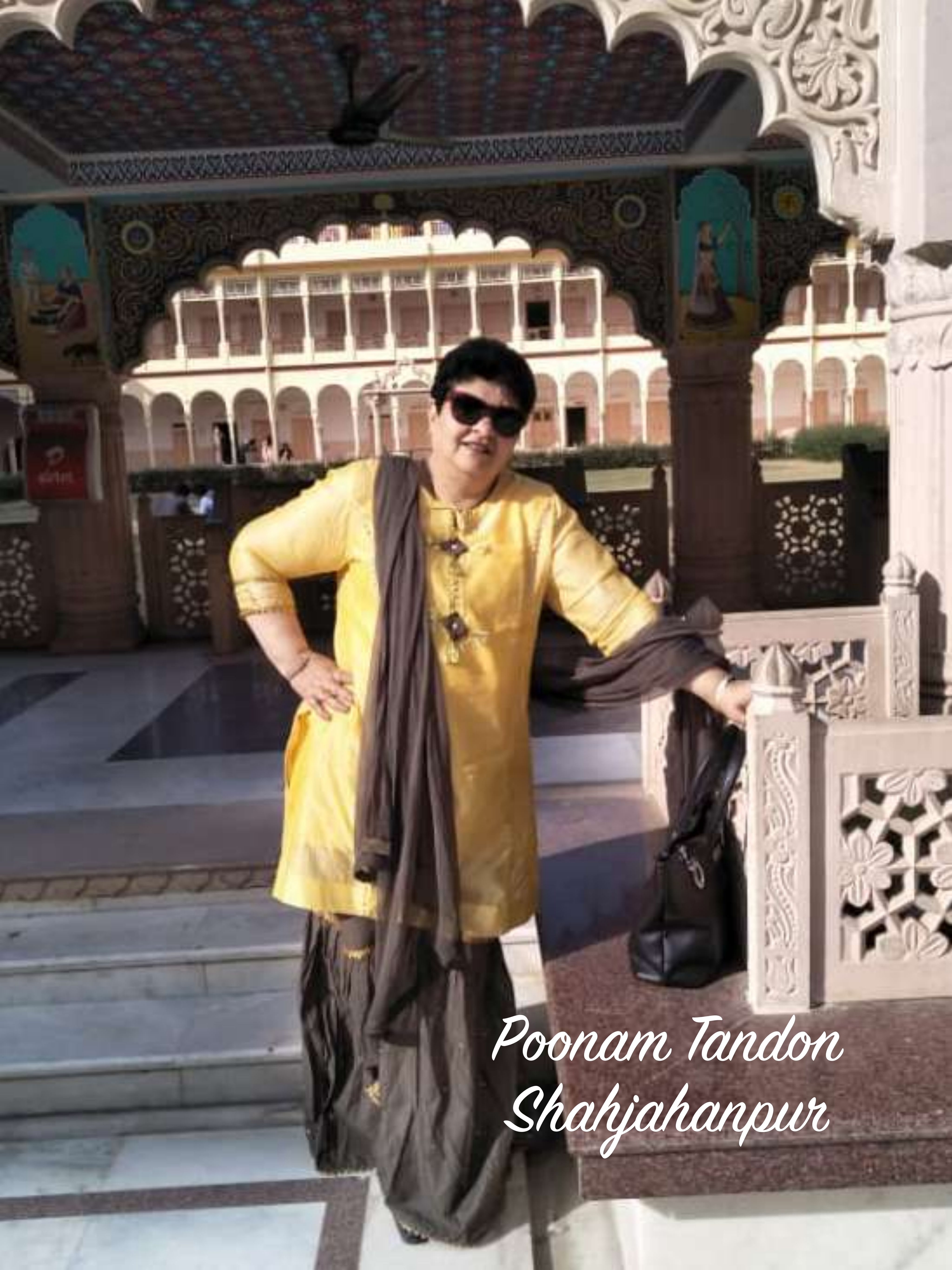
Poonam Tandon
Shahjahanpur

patrika@ikmgglobal.org

+91 9958363661

Printer & Publisher: IKMG Ltd.
Editor: Mr. Sharad Mehrotra
Proof Reading: Mr. Manoj Puri

IKMG reserves the rights for reproduction and distribution of the published content
IKMG does not support plagiarism and any such act is the sole responsibility of the writer